उलमा ए देवबंद के शैतानी अक़ाइद व हक़ाइक़

120 से ज़्यादह हवालाजात पर मुश्तमिल ऐसी तहरीर जिसे पढने के बाद कोई भी ‘‘मुसलमान’’ अपना तअ़ाल्लुक़ देवबंदी वहाबी मज़हब के साथ रखना पसन्द न करेगा।

देवबन्दियों की ग़ुस्ताख़ाना इबारात और उलमा ए देवबन्द का किरदार जिसे पढ़ने के बाद कोई भी मुसलमान उनका साथ न देगा।

‘‘नक़्ले कुफ्र, कुफ्र न बाशिद’’ इन इबारात को अस्ल किताबों से देखकर नक़ल कर रहे हैं और ये सिर्फ इस्लाह के लिए है कि ऐसे लोगों की पैरवी करके अपना घर जहन्नम में न बना लें। क्योंकि हर ग़ुस्ताख़ ए रसूल जिसने जानबूझ कर दानिश्ता ग़ुस्ताख़ी की हो, वासिले जहन्नम होगा।

''उलमा ए देवबन्द के शैतानी अक़ाइद व हक़ाइक़''

नोट : ''हवालाजाती किताबों के पब्लिशर का एक दफ़ा हवाला दे दिया गया है बाक़ी हर जगह उसी पब्लिशर की किताब से हवाला दिया गया है दूसरे पब्लिशर्ज़ की किताबों या एडीशन के लिहाज़ से सफहात आगे–पीछे हो सकते हैं''

1 अल्लाह तआ़ला झूठ बोल सकता है

''अलहासिल इम्कान ए किज़्ब (झूठ) से मुराद दख़ूले किज़्ब (झूठ) तहत ए क़ुदरत ए बारी तआला है – जमीअ् मुहक्क़िक़ीन अहले इस्लाम, सूफ़ियाए किराम, उलमा ए उज़्ज़ाम का मज़हब इस मसअले मे ये है कि किज़्ब (झूठ) दाखिल तहते कुदरत बारी तआला है''(सफा 237) ''बस साबित हुआ के किज़्ब दाख़िल तहते क़ुदरत बारी तआ़ला जल्ला ओ आ़ला है, क्यूँ न हो वहुवा अ़ला कुल्लि शयइन क़दीर''(सफा 238 फतावा रशीदिया, तहरीर–रशीद अमहद गंगोही)

2 अल्लाह तआ़ला को पहले से इल्म नहीं होता के बन्दे क्या करेंगे

''और इन्सान ख़ुद मुख़्तार है अच्छे काम करे या न करे और अल्लाह को पहले उससे कोई इल्म नहीं, कि क्या करेंगे बल्के अल्लाह को उनके करने के बाद मालूम होगा'' (बलग़तुल हैरान सफा 157, 158 मतबुआ़ मकतबा–उख़ूवत नज्द लाहौर, तहरीर हुसैन अली देवबन्दी)

3 शैतान और मलकुल मौत का इल्म, हूज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ज़्यादह है

''शैतान व मलकुल मौत का हाल देखकर इल्म मुहीत ज़मीन का फ़ख़्रे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़िलाफे नुसूसे कतइया के बिला दलील महज़ क़यासे फ़ासिदह से साबित करना शिर्क नहीं तो कौन सा ईमान का हिस्सा है ? शैतान को और मलकुल मौत को ये उसअते नस (.क़ुरआन पाक की आयात) से साबित हुई। फ़ख़्रे आलम की उसअते इल्म की कौनसी नसे क़तई है ?'' (बरहीने क़ातियह, सफा 51 मतबूआ मौलवी मुहम्मद यहि़या कुतुब देवबन्द सहारनपुर, तहरीर : रशीद अहमद गंगोही व ख़लील अहमद अम्बेठ्वी)

4 नमाज़ में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ख़याल बैल और गधे के ख़याल से भी बुरा है

''(नमाज़ के वसवसों के बयान में) ज़िना के वससवे से अपनी बीवी की मुजामेअ़त का ख़याल बेहतर है और शैख़ या उसी जैसे बुजुर्गों की तरफ़ ख्वाह कि जनाबे रिसालत मआ़ब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही हों, अपनी हिम्मत (ख़याल) को लगा देना, अपने बैल और गधे की सूरत में मुस्तग़रक़ (डूबने) होने से बुरा है'' (सिराते मुस्तक़ीम (उर्दू) सफ़ा 17 मतबुआ कुलुबख़ाना रहीमिया देवबन्द तहरीर : इस्माईल देहलवी)

5 रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वालदैन मुसलमान नहीं

''सवाल : हमारे हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वालदैन मुसलमान थे या नहीं ? जवाब : हज़रत सल्लल्लाहु–अलैहि वसल्लम के वालदैन के ईमान में इख़्तिलाफ़ है हज़रत इमाम साहब का मसलक है कि उनका इन्तिक़ाल हालते कुफ़्र में हुआ'' (फ़तावा रशीदिया, सफ़ा 245, तहरीर : रशीद अहमद गंगोही)

तबसरह : लानत है, ऐसे गन्दे अक़ीदे पर जो इन देवबंदियों, वहाबियों का रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वालदैन करीमैन (रदि.) के मुताल्लिक़ है– ''अल्लाह तआला ने फ़रमाया, काफिर तो नापाक ही है'' (सूरतुत्तौबा, आयत न. 28) और नबीए पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फररमाया ''मैं हमेशा पाक मर्दों की पुश्तों से पाक बीवियों के पेटों में मुन्तक़िल होता रहा'' (शरह अल ज़रक़ानी अली अल् **मवाहिबुल्लदुनिया** ब–हवाला अबी नईम अन् इब्ने अब्बास) लिहाज़ा वाल्दैने मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को काफिर मानना बज़ाते खुद कुफ़्र है इससे आप उन लोगों के ईमान का अन्दाज़ा लगा सकते है – देवबंदियों के मौलवी मुफ्ती अज़ीज़ुर्रहमान उसमानी मुफ़्तिए अव्वल दारूलउलूम देवबन्द फतावा दारूल उलूम देवबन्द (मतबुआ मकतबा हक़्क़ानिया मुलतान जिल्द–3, सफ़ा 163, फतवा न. 832) में लिखते हैं **सवाल** : एक शख़्स ऐलानिया ये कहता है के, **आँहज़रत** सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बुत परस्त यानी मुशरिक की औलाद हैं और काफ़िर के मकान में पैदा हुए ऐसे शख़्स के पीछे नमाज़ जाइज़ है या नहीं ?, **जवाब** : एक हदीस शरीफ़ में ये मज़मून आया है के एक शख़्स ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अपने बाप का और आपके बाप का हाल दरयाफ़्त किया तो आपने फरमाया के मेरा और तेरा बाप दोज़ख़ में है (इस हदीस का कोई हवाला पेश नही किया गया) आगे जाकर लिखता है कि बाज रवायात ऐसी भी नक़ल है जिनमें आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के वालदैन का दोबारह ज़िन्दा होकर ईमान लाना साबित किया। इन रवायात में से मुसलमान किस रवायात को ज़ियादह तरजीह देगा ? ...... लेकिन इनके दोरंगी अक़ीदह नम्बर–31 मे देखी जा सकती है

6 रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जैसा इल्मे ग़ैब, ऐसा इल्मे ग़ैब बच्चों, जानवरों और पागलों को भी हासिल है

''फिर ये कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ाते मुक़द्दसा पर इल्मे ग़ैब का हुक्म किया जाना अगर बक़ौल ज़ैद सही हो तो दरयाफ्त तलब ये अम्र है कि उस ग़ैब से मुराद बाज़ ग़ैब है या क़ुल ग़ैब अगर बाज़ उलूमे ग़ैबिया मुराद है तो उसमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही की क्या तख़्सीस (ख़ुसूसियत) है, ऐसा इल्मे ग़ैब तो ज़ैद व **उमर बल्कि हर सबी**(बच्चे) व **मजनून**(पागल) बल्कि जमीअ् हैवानात व बहाएम (जानवर और चौपाए) के लिए भी हासिल है'' (हिफ्ज़ुल ईमान सफ़ा –13, मतबुआ क़दीमी कुतुबखाना मक़ाबिल आरामबाग़ कराची, तहरीर : अशरफ अली थानवी)

7 हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ख़ातमुन्नबीयीन (आख़िरी नबी) होने का इन्कार, ख़त्मे नबूव्वत पर डाका

''अगर बिलफर्ज़ बाद ज़मानए नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कोई नबी पैदा हो तो फिर भी ख़ातमियते मुहम्मदी (हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आख़िरी नबी होने) में फर्क़ न आयेगा'' (सफ़ा–25) ''अगर बिल फ़र्ज़ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में या बिल फ़र्ज़ आपके बाद भी कोई नबी फ़र्ज़ किया जाए तो भी ख़ातमियते मुहम्मदिया (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) (हुज़ूर के आख़िरी नबी होने) में फ़र्क़ न आयेगा'' (सफ़ा–13) ''अव्वल तो मानी ख़ातमुन्नबीयीन मालूम करने चाहिए ताकि फ़हमे जवाब में कुछ वक़्त न हो सो अवाम के ख़याल में तो, रसूलुल्लाह सल्ललाहु अलैहि वसल्लम का ख़ातिम होना बईं मानी है के आप सल्ललाहु अलैहि वसल्लम का ज़माना अम्बिया

ए साबिक़ा के ज़माने के बाद और आप सब में आख़िरी हैं। मगर अहले फ़हम पर रौशन होगा कि तक़द्दुम या ताख़ीरे ज़मानी (ज़माने के लिहाज़ से पहले या बाद में आना), में बिज़्ज़ात कुछ फज़ीलत नहीं। (तहज़ीरून्नास, सफ़ा–3, मतबुआ कुतुबखाना रहीमिया देवबन्द, तहरीर : क़ासिम नानौतवी बानिए दारूल उलूम देवबन्द)

तब्सरह : मिर्ज़ाई आज भी इसी किताब का हवाला देकर साबित करने की कोशिश करते हैं कि मिर्ज़ा का दावए नबूवत इस इबारत के मुताबिक़ था।

8 अल्लाह तआ़ला अपने वादे के ख़िलाफ भी कर सकता है

''अल्लाह तआ़ला ने जो वादह वईद फ़रमाया है उसके ख़िलाफ पर क़ादिर है'' (सफ़ा–237) फतावा रशीदिया, **तहरीर** : रशीद अहमद गंगोही)

तब्सरह : दूसरे अलफ़ाज़ में ये कुरआने पाक की आयते मुबारका का इन्कार भी है अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है ''अल्लाह अपना वादा ख़िलाफ़ नहीं करता लेकिन बहुत लोग नहीं जानते।'' (सूरए अर्रूम, आयत–6)

9 नबी शागिर्द और देवबन्दी मौलाना उस्ताद

''एक स्वालेह, फ़ख़रे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत से ख़्वाब में मुशर्रफ़ हुए तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को उर्दू में कलाम करते हूए देखकर पूछा के आपको ये कलाम (यानी उर्दू ज़ुबान) कहाँ से आ गई , आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तो अ़रबी हैं। (हुज़ूर ने फ़रमाया) सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया के ज़बसे उलमा ए मदरसा देवबन्द से हमारा मुआमला (ताल्लुक़) हुआ, हमको ये ज़ुबान आ गई। सुब्हान अल्लाह। इससे मर्तबा इस मदरसा का मालूम हुआ'' (बराहिने क़ातियह, सफ़ा–26, मतबुआ़ मौलवी मुहम्मद याहिया) ताजिर कुतुबे दीनिया सहारनपुर, तहरीर : रशीद अहमद गंगोही व ख़लील अहमद अम्बेठवी)।

तब्सरह : इस इबारत सें साफ़ और वाज़ेह मफ़हूम यही है कि पहले तो नबीए पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उर्दू ज़बान नहीं आती थी लेकिन ज़बसे मदरसा देवबन्द के मौलवियों से हमारे मआ़मले का ताल्लुक़ हुआ हमें ये ज़ुबान आ गई यानि उनसे सीख़ ली। इस मनगढ़त ख़्वाब को मदरसा देवबन्द की सनद बनाया कि इससे इस मदरसे का रूतबा मालूम होता है

10 अम्बिया बड़े भाई उनकी ताज़ीम इन्सानों की सी करो

''औलिया व अम्बिया और इमामज़ादे, पीर और शहीद यानी जितने अल्लाह के मुक़र्रब बन्दे हैं वो एक इन्सान ही हैं और बनदए आ़ज़िज़ और हमारे भाई, मगर अल्लाह ने उनको बड़ाई दी और वो बड़े भाई हुए। हमको उनकी फ़रमाबरदारी का हुक्म है हम उनसे छोटे हैं, सो उनकी ताज़ीम इंसानों की सी करनी चाहिए'' (तकवीयतुल ईमान मअ् तज़कीरूलअख़्वान, सफ़ा–80 मतबुआ़ शमा बुक एजेन्सी उर्दू बाज़ार लाहौर, तहरीर : इस्माईल देहलवी)

तब्सरह : अशरफ़ अली थानवी देवबन्दी अपने बड़े भाई की इतनी ताज़ीम करता था कि उसके सर में पेशाब भी कर दिया करता था। (मलफ़ूज़ात हकीमुल उम्मत ज़िल्द–4, सफ़ा–262 मतबुआ इदारए तालीफ़ात अशरफ़िया मुलतान) **नोट** : इसकी तफ़सील अक़ीदह नम्बर 89 पर देखें)

और नबी की बारगाह तो वो है कि जिसके बारे में अल्लाह तआला ने कुरआ़ने पाक में फ़रमाया – ''ऐ ईमान वालों अपनी आवाज़े ऊंची न करो उस गैब बताने वाले (नबी) की आवाज़ से और उनके हुज़ूर चिल्लाकर न कहो जैसे आपस में एक दूसरे के सामने चिल्लाते हो, कि कहीं तुम्हारे अ़मल अकारत (ज़ाया या बरबाद) हो ज़ाएं और तुम्है ख़बर न हो'' (सूरतुल हुजरात, आयत न. 2) नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह है कि जिस लफ़्ज में गुस्ताख़ी का शायबा (शक) भी गुज़रता हो उसको बोलने से भी अल्लाह तआ़ला ने कुरआने पाक में मना फ़रमा दिया और इरशाद

हुआ—''ऐ ईमान, वालों राइना न कहो और यूँ अर्ज़ करो कि हुज़ूर हम पर नज़र रखें (सूरए बक़रह, आयत न. 104)।

इस आयत की शाने नुज़ूल ये है कि जब रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सहाबए कराम को कुछ तालीम व तलक़ीन फ़रमाते तो अगर किसी सहाबा को समझने में कुछ दुश्वारी होती तो वो अर्ज़ करते ''राइना या रसुलुल्लाह'' (हमारे हाल की रिआयत फ़रमाएं) यानी कलामे अक़दस को अच्छी तरह समझ लेने का मौक़ा दीजिए। यहूदियों की लुगत में ये कलिमा (राइना यानी ऐ मेरे चरवाहे) बे अदबी के मआनी रखता था। उन्होंने इस नीयत से कहना शुरू किया। हज़रते सअ़द बिन मआज़ (रदिअल्लाहु तआला अन्हू) यहूद की इस्तिलाह से वाक़िफ़ थे, उनकी ज़ुबान से सुनकर फ़रमाया—ऐ दुश्मनाने ख़ुदा तुम पर अल्लाह की लानत अगर मैनें अब किसी की ज़ुबान से ये कलिमा सुना उसकी ग़र्दन मार दूंगा। यहूदियों ने कहा कि मुसलमान भी तो यही करते है। इस पर आप (रदिअल्लाहु तआला अन्हु) रंजीदह होकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए ही थे कि आयत नाज़िल हुई, जिसमें ''राइना'' कहने की मुमानियत फ़रमा दी गई और इस मआनी का दूसरा लफ़्ज ''उन्ज़ुरना'' कहने का हुक्म हुआ। इससे मालूम हुआ कि अम्बिया की ताज़ीम व तौक़ीर और उनकी जनाब में कलिमाते अ़दब अर्ज़ करना फर्ज़ है और जिस कलिमे में तर्के अ़दब का शाएबा भी हो वो ज़ुबान पर लाना मना है तो फिर ये कहना कि ''नबी हमारे बड़े भाई और उनकी ताज़ीम इंसानों की सी करो'' देवबन्दी ये बताएं कि बन्दा अगर बड़े भाई को मारे—पीटे या गाली गलौच दे तो क्या वो काफ़िर हो जाता है ? जी नहीं। हरगिज़ नहीं लेकिन हुज़ूर—सल्लल्लाहु अलैहि वस्सलम की आवाज़ से आवाज़ बुलन्द होने से तमाम आ़माल बरबाद हो जाते हैं, तो क्या बड़े भाई के सामने ऊंचा बोलने से भी ऐसा होता है, हरगिज़ नही लेकिन ये बदबख़्त इस बात को कैसे समझें कि है ही देवबन्द (यानी शैतान के पैरोकार)

11 खत्मे नबुव्वत पर एक और डाका

उस शहंशाह (अल्लाह तआ़ला) की तो ये शान है कि एक आन में एक हुक्म ''कुन'' से अगर चाहे तो करोड़ों नबी और वली और जिन्न व फ़रिश्ता, जिबराईल और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पैदा कर डाले'' (तक़वीयतुल ईमान, सफ़ा—41 तहरीर : इस्माईल देहलवी)।

तब्सरह : इस अक़ीदे से ख़तमे नबूवत का इंकार वाज़ेह है हालाँकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इर्शादे गिरामी है कि, ''मेरे बाद कोई नबी नहीं'' और देवबन्दी कहते है कि ख़ुदा चाहे तो करोड़ों मुहम्मद के बराबर पैदा कर डाले। ये ख़ुदा और उसके रसूल से बग़ावत नहीं तो और क्या है ? क्यूँकि अगर मुहम्मद करेगा तो नबूवत भी देगा।

12 हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मरकर मिट्टी में मिलने वाले हैं (एक झूठी गढ़ी हुई हदीस़)

''हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि मै भी एक दिन मरकर मिट्टी में मिलने वाला हूँ'' (तकवीयतुल ईमान मअ् तज़कीरूल अख़्वान, सफ़ा—81) इस्माईल देहलवी ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ से झूठ मन्सूब किया है और इन देवबन्दियों का ये अक़ीदह क़ुरआन व हदीस के ख़िलाफ है क्यूँकि हदीस़ शरीफ़ सें आता है कि ''बेशक़ अल्लाह तआ़ला ने हराम फ़रमा दिया। पस (बस) अल्लाह के नबी ज़िन्दा होते है और उन्है (क़ब्र में) रिज़्क़ भी दिया जाता है'' (इब्ने माज़्ज़ह—मिशकात शरीफ़)

तब्सरह : इस्माईल देहलवी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुताल्लिक़ झूठ बोला और हदीस़ शरीफ़ में इसकी ये सज़ा है कि—'' सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया मुझसे झूठी बात मन्सूब न करो, क्यूँकि जो मेरे मुताल्लिक़ झूठ बोले वो जहन्न्म में डाला जायेगा'' (सहीह बुख़ारी ज़िल्द—1 किताबुल इल्म)। तो इस हदीसे़ मुबारका से ये साबित हुआ कि इस्माईल देहलवी का ठिकाना ज़हन्नम है।

13 रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बड़े भाई

''एक अदना सा आदमी है कि वह कह रहा है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरे बड़े भाई हैं। अगर किसी ने बवजह बनीं आदम (आदम की औलाद) होने के साथ (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को भाई कहा तो क्या ख़िलाफे नस (यानी .कुरआने पाक की आयात के ख़िलाफ़) कह दिया। (बराहीने कातियह, सफ़ा–3, तहरीर : ख़लील अहमद अंबेठवी)

तब्सरह : आप इनके इस अक़ीदे का मुक़म्मल रद .कुरआन और हदीस़ से ऊपर मुलाहिज़ा फ़रमा चुके हैं। फर्ज़ कीजिए कोई शख़्स अपनी ख़ालाज़ाद बहन से शादी के बाद उसे बहन कहे तो क्या उसकी शादी बरकरार रहेगी ? इसी तरह नबीए पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए ऐसे अल्फ़ाज़ इस्तेमाल करना बे–अ़दबी और बे–ईमानी है।

14 नबी का झूठ से पाक होना ज़रूरी नहीं

''नबी का हर झूठ से पाक और मासूम होना ज़रूरी नहीं'' (तस्फ़ीयतुल अक़ाइद, सफ़ा–25 सैयद मालिक कुतुबखाना अज़ीज़िया देवबन्द, तहरीर : क़ासिम नानौतवी)।

15 अम्बिया की शान में ग़ुस्ताख़ी

''सब बन्दे बड़े (यानी अम्बिया) हों या छोटे (यानी बाक़ी सब) **यकसाँ** (एक जैसे) हैं, बेख़बर हैं और नादान हैं'' (तक़वीयतुल ईमान मअ़तज़्किरूल अख़्वान, सफा–33)।

16 अम्बिया की शान में एक और ग़ुस्ताख़ी

''और ये यक़ीन जान लेना चाहिए कि हर मख़लूक बड़ा हो या छोटा वो अल्लाह की शान के आगे चमार से भी ज़लील है'' (तक़वीयतुल ईमान मअ् तज़कीरूल अख़वान, सफा–19, तहरीर : इस्माईल देहलवी) मख़लूक़ में अम्बिया, औलिया, फ़रिश्ते सब शुमार है तो आप अन्दाज़ा कर लें कि नबियों और वलियों और दूसरे मुक़र्रब बन्दों की शान में किस क़दर ग़ुस्ताख़ी है।

17 जिसका नाम मुहम्मद या अ़ली है, वह किसी चीज़ का मुख़्तार नहीं

''जिसका नाम मुहम्मद या अ़ली है वह किसी चीज़ का मुख़्तार नहीं'' (तक़वीयतुल ईमान, सफ़ा–55, तहरीर – इस्माईल देहलवी) मौलवी हुसैन अहमद साहब मदनी देवबन्दी लिखते हैं कि ''मक्कए मुअज़्ज़मा से रवाना होने के बाद चौथे रोज़ जब के .कुज़ैमा से राबग़ को काफ़िला जा रहा था, रात में ऊँट पर होते हुए ख़्वाब में देखा कि जनाब सरवरे काइनात अलैहिस्सलातु वस्सलाम तशरीफ़ लाए हैं। मै उनके क़दमों पर गिर गया। आपने मेरा सर उठाकर फरमाया–'क्या **माँगता** है ? मैने अर्ज़ किया कि जो किताबें पढ़ चुका हूँ वो याद हो जाएं और जो नहीं पढ़ी हैं उनके समझने की .कुव्वत हो ज़ाए। तो फरमाया कि ''तुझको दिया'' (नक़्शए हयात सफ़ा–96)

18 हूज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बहुत ख़ौफ़ और दहशत में आ गए

''मुल्के अ़रब में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक गँवार की बात सुनकर बहुत ख़ौफ़ और दहशत में आ गए'' (तकवीयतुल ईमान मअ् तज़कीरूल अख़वान, सफ़ा–7, तहरीरः इस्माईल देहलवी) इसी तक़वीयतुल ईमान के पुराने एडीशन में लफ़्ज़ ख़ौफ़ की ज़गह पर बे हवास हो गए, लिखा है।

19 अम्बिया की शान में गुस्ताख़ी

''अम्बिया अपनी उम्मत से मुम्ताज़ होते हैं तो उलूम ही में मुमताज़ होते हैं बाक़ी रहा अ़मल उसमें बसा अवक़ात बज़ाहिर उम्मती मसावी (बराबर) हो जाते हैं, बल्कि बढ़ जाते हैं'' (तहज़ीरून्नास, सफ़ा–5 तहरीर : क़ासिम नानोतवी)

तब्सरह : इस गन्दे अक़ीदे के रद में वैसे तो बेशुमार अहादीस़ पेश की जा सकती हैं लेकिन इख़्तिसार के तौर पर एक हदीस शरीफ़ बयान की जाती है –

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमरू (रदि.) बयान करते हैं मैंने नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बैठकर नमाज़ पढ़ते हुए देखा। मैने अपना हाथ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सरे अक़्दस पर रखा तो आपने फरमाया ऐ अब्दुल्लाह बिन उमरू क्या बात है ? मैनें अर्ज़ की, या रसूलुल्लाह मुझे ये बताया गया है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि बैठकर नमाज पढ़ने वाले को निस़्फ (आधा) सवाब मिलता है, जबकि आप ख़ुद बैठकर नमाज़ पढ़ रहे हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया (ये बात) ठीक है लेकिन, मैं तुम्हारी तरह नहीं हूँ (यानि अज्रो–सवाब के आम उसूलों का इतलाक़ मेरी ज़ात पर नहीं होता है) (मुस्लिम शरीफ़, जिल्द–1 किताब सलातुल मुसाफिरीन व क़सरहा)। अब इस हदीस़े मुबारका को और देवबंन्दियों के उस गंदे अक़ीदे, कि उम्मती आमाल में नबी से भी बढ़ जाता है, ख़ुद फैसला करें कि ये अंबिया की शान में तौहीन है या नहीं ? कि एक उम्मती को नबी से अफज़ल कह दिया। हमारा अ़क़ीदा है ''वली कितने ही मरतबे वाला हो, किसी सहाबी के बराबर नहीं हो सकता और सहाबी कितने ही बड़े मरतबे वाले हों किसी नबी के बराबर नहीं हो सकते और जो किसी ग़ैरे नबी को किसी नबी से अफज़ल या बराबर बताए, काफ़िर है।

20 रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पुल सिरात से गिरने से बचा लिया

(असल इबारत फारसी मे है जिसका तर्जुमा यूँ है)'' मैने ख़्वाब देखा कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पुलसिरात से गिर रहे हैं तो मैने उन्है बचा लिया'' (बलग़तुल हैरान, सफ़ा–8 मतबुआ़ मक़्तबा उख़ूवत लाहौर, तहरीर : हुसैन अली देवबन्दी)

तब्सरह : ये बात ज़हन नशीन कर लें कि पुलसिरात जहन्नम के ऊपर एक पुल है जिसके ऊपर से तमाम इंसानों (हज़रते आदम अलैस्सिलाम से क़यामत तक आने वाले लोगों) को गुज़रना होगा। देवबन्दी मियाँ का मतलब है कि (मआ़ज़ अल्लाह, सुम्मा मआ़ज़अल्लाह) नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जहन्नम में गिरने वाले थे मैने उन्है बचा लिया।

21 नबी को अपने अन्जाम का इल्म नहीं और देवबन्दी मियाँ आने वाल हर चीज का बता सकते हैं

''अल्लाह के नबी को अपने अंजाम और दीवार के पीछे का इल्म नहीं'' (बराहिने क़ातिया, सफ़ा–51, तहरीर : खलील अहमद अम्बेठवी)

तब्सरह : ख़्वाजह अज़ीज़ुल हसन देवबन्दी और मौलवी अब्दुल हक़ देवबन्दी अशरफुल सवानेह, ज़िल्द–1 सफ़ा–47, मतबुआ इदारा तालीफ़ाते अशरफिया इशाअत रबीउल अव्लल 1427 हिज़्री में रक़्म तराज़ हैं कि अशरफ़ अली थानवी देवबन्दी के वालिदे माजिद को मर्ज़े ख़ारशत हो गया था और किसी दवा से फ़ायदा न होता था। एक डाक्टर ने इस मर्ज़ की एक अकसीर दवा दी मगर क़ातिउन्नस्ल है (जिससे आइन्दा नस्ले इंसानी पैदा न हो यानी नामर्द बना देने वाली)। वालिद साहब इस मर्ज़ से तंग थे, उन्होंने दवा लेकर खा ली। जब वाल्दा साहिबा को पता चला तो शख़्त परेशान हुईं और ख़बर नानी जान तक भी पहुँच गई। एक दिन हाफ़िज़ ग़ुलाम मुर्तज़ा मज्ज़ूब पानीपती तशरीफ़ लाए तो उनसे नानी जान ने शिक़ायत की, कि हज़रत मेरी इस लड़की (थानवी साहब की वाल्दा) के लड़के ज़िन्दा नहीं रहते। हाफ़िज साहब ने बतरीक़ मुअम्मा (पहेली) फरमाया कि उमर व अ़ली की कशाकशी में मर जाते है। अबकी बार अ़ली के सुपुर्द कर देना, ज़िन्दह रहेगा। इस मज्ज़ूबाना मुअ़म्मे को कोई न समझा लेकिन वाल्दा साहिबा ने अपने फ़हमें ख़ुदादाद और नूरे

फ़िरासत से उसको हल किया और फ़रमाया कि हाफ़िज़ साहब का ये मतलब है कि लड़कों के बाप फारूक़ी है और माँ अल्वी है अब तक जो नाम रखे गये वो बाप के नाम पर रखे गये। यानी फज़्ले हक़ वगैरह अबकी बार जो लड़का हो उसका नाम ननिहाल के नामों के मुताबिक़ रखा जाए जिसके आख़िर में अली हो। हाफिज़ साहब ये सुनकर हँसें और फ़रमाया कि वाक़ई यही मेरा मतलब है ये लड़की बड़ी अक़लमन्द मालूम होती है फिर फ़रमाया इन्शा अल्लाह इसके दो लड़के होंगे और ज़िन्दा रहैंगे। एक का नाम अशरफ़ अली खाँ रखना, दूसरे का अकबर अली खाँ। नाम लेते वक़्त खाँ अपनी तरफ़ से जोश में आकर बढ़ा दिया था। किसी ने पूछा हज़रत क्या वो पठान होंगे। फरमाया नहीं, अशरफ अली और अकबर अली नाम रखना। ये भी फरमाया कि दोनों साहिबे नसीब होंगे। एक मेरा होगा वो मौलवी और हाफ़िज होगा और दूसरो दुनियादार होगा। चुनाँचे ये सब पेशीनगोइयाँ हर्फ़ ब हर्फ़ रास्त (सही) निकलीं। हज़रते वाला (यानी थानवी साहब) फरमाया करते थे कि ये मैं जो कभी उख़डी–उख़डी बातें करने लगता हूँ ये उन्ही मज्ज़ूब साहब की रूहानी तवज्जो का असर है, जिनकी दुआ से मैं पैदा हुआ हूँ। इस इबारत से चन्द नताएज निकलते हैं कि– अल्लाह के वली भी ऐसे शख़्स के लिये बाइसे बरकत हो सकते हैं जिसको दवा ने औलाद के क़ाबिल न छोड़ा हो और उनकी दुआ से अल्लाह तआ़ला औलादे नरीना भी अता फ़रमाता है और अल्लाह ने उन्हें ये इल्म भी अ़ता फ़रमाया होता है कि उनके नाम क्या रखे जाएं। वो जिन्दा भी रहैंगे और वो कैसे होंगे। जबकि इन बदबख़्तों का, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में अक़ीदह ऊपर बयान हो चुका है नीज़ अक़ीदा न. 17 पर भी ग़ौर फरमाएं। ये वाक़या बयान करते हुए भी इसने एक डन्डी मारी है कि उमर व अ़ली की कशमकश में मर जाते हैं। यानी हज़रत उमर और हज़रत अ़ली को एक दूसरे का मुख़ालिफ़ कहकर अपने ख़ब्से बातिन का इज़हार कर ही दिया।

22 देवबन्दियों का नया कलमा और दरूद

अशरफ़ अली थानवी के एक मुरीद ने सवाल भेजा कि मैने ख्वाब में कलिमए तैयबा की जगह ला इलाहा इल्लल्लाह अशरफ़ अ़ली रसूलुल्लाह पढ़ा फिर वो बेदार हो गया और सोचा ख्वाब में क़लिमा ग़लत पढ़ा ग़लती के तदारूक में मुझे दरूद शरीफ़ पढ़ना चाहिए। लेकिन जब दरूद पढ़ने की कोशिश की तो ये पढ़ दिया– अल्लाहुमा सल्ले अल्ला सैयदना व नबियेना अशरफ़ अली। थानवी साहब बजाए उसें ये कहने के, कि तुमने कलमा और दरूद ग़लत पढ़ा है, तौबा करो। फ़रमाते हैं कि इस वाक़ए में तस्सली थी कि जिसकी तरफ़ तुम रूजू करते हो वो बऔना तआ़ला तबाए सुन्नत है'' (रिसाला अल इम्दाद, माह सफ़र 1336 हिज़री, सफ़ा–37 तहरीर : अशरफ़ अली थानवी)

तब्सरह : किस अन्दाज में अल्लाहुम्मा सल्ले अला सैयदना व नबीयेना अशरफ़ अ़ली और लाइलाह इल्लल्लाह अशरफ़ अली रसूलुल्लाह की तसदीक़ कर दी। क्या ये ख़त्मे नबूव्वत पर डाका नहीं ? या इससे झूठे दावए नबूव्वत की बू नहीं आती ? ख़त्मे नबूव्वत कान्फ्रेन्स कराने वाले अपने उलमा की इन इबारत को लोगों के सामने क्यूँ नहीं लाते ?

23 अम्बियाए कराम और औलिया अल्लाह की शान में ग़ुस्ताख़ी

''अल्लाह के रूबरू सब अम्बिया और औलिया एक ज़र्रए नाचीज़ (सबसे कम हैसियत वाला ज़र्रह) से भी कमतर हैं।'' (तक़वीयतुल ईमान, सफ़ा–74)

तब्सरह : इनका ये अक़ीदा भी .क़ुरआ़न व हदीस़ के सरासर ख़िलाफ़ है और कितनी ख़बासत और बे–ईमानी है जिन हस्तियों के बारे में अल्लाह तआ़ला .क़ुरआने पाक में इर्शाद फ़रमाता है– ''अल्लाह ने इब्राहीम को अपना ख़लील और दोस्त बनाया'' और फ़रमाया– ''मूसा अलैहिस्सलाम अल्लाह के नज़दीक इज़्ज़तो–आबरू वाले थे'' और फ़रमाया– ''हज़रते ईसा दुनिया व आख़िरत में वज़ीह हैं'' ये हस्तियाँ किस क़दर अज़ीम, महबूब और जलीलुलक़द्र और अर्फ़ाँ व आ़ला वज़ाहत की मालिक हैं और फ़िर अल्लाह के ख़लील और महबूब जैसी मुक़द्दस हस्तियों का मर्तबा एक ज़र्रए नाचीज़ बताना, कितनी बड़ी हिमाक़त और ग़ुस्ताख़ी है जिन हस्तियों के क़दम लगने से पहाड़ियाँ अल्लाह की निशानियाँ बन जाएं। और इर्शाद फ़रमाया–''बेशक सफ़ा और मर्वह पहाड़ी, अल्लाह की निशानियों में

से हैं''। और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया ''मैं अल्लाह का हबीब हूँ'' (तिर्मिज़ी, मिश्क़ात)।

24 रसूल के चाहने से कुछ नहीं होता

(तक़वीयतुल ईमान मअ् तज़्कीरूल उख़्वान, सफ़ा—77, तहरीर : इस्माईल—देहलवी) इस मौलवी से ये पूछा जाए कि क़िब्ला किसकी ख़्वाहिश पर तब्दील हुआ ? जिसका ज़िक्र .कुरआन पाक में भी मौजूद है। नमाज़ें और रोज़े किसके चाहने से कम हुए और वहाँ कौन वसीला बना ? ग़ुस्ताखाना अक़ीदे के रद में ये हदीस शरीफ़ काफ़ी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमाया ''ऐ लोगों बेशक अल्लाह ने तुम पर हज फर्ज़ कर दिया है तो अफ़रा बिन हाबिस ख़डे हो गए और अर्ज़ की, कि या रसूलुल्लाह क्या हर साल हज फर्ज़ है ? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अगर मैने हाँ कर दी तो हो जाएगा और अगर हर साल हज फ़र्ज़ हो गया तो तुम इसकी अदायगी की ताक़त नहीं रखते'' (मिश्क़ात—निसाई—दारमी)।

25 हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इल्म मलकुल मौत से ज़ियादह नहीं

''आले इल्लीयीन मे रूह मुबारक अलैहिस्सलाम की तशरीफ़ रखना और मलकुल मौत से अफ़ज़ल होने की वज़ह से हरगिज़ साबित नहीं होता कि इल्म आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का उन उमूर (कामों) में बराबर भी हो (यानी ज़्यादह होना तो दूर की बात बराबर भी नहीं हो सकता'' (बराहिने क़ातिया, सफ़ा—52, तहरीर : ख़लील अहमद अम्बेठवी) ।

26 शफ़ाअते मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इन्कार जिसका बयान दर्जनों अहादीस में है

''नबी और वली को अल्लाह की मख़लूक़ जानकर वकील और सिफ़ारिशी समझने वाला, मदद के लिए पुकारने वाला, नज़्रो—नियाज़ करने वाला मुसलमान और काफिर अबू ज़हल, शिर्क में बराबर है'' (तक़वीयतुल ईमान मअ् तज़्कीरूल अख़्वान, सफ़ा—10 तहरीर : इस्माईल देहलवी) ।

27 अशरफ अली थानवी अंग्रेजों का वज़ीफा ख़्वार

''हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी साहब हमारे आपके मुस्लिम बुज़ुर्ग व पेशवा थे। उनके मुताल्लिक़ बाज लोगों को ये कहते हुए सुना गया कि उनको छः सौ रूपये माहवार हुकूमत की जानिब से दिये जाते थे। (मकालमतुल सदरैन, सफा—9)

तब्सरह : उस वक़्त सिपाही की तनख्वाह सात से नौ रूपए हुआ करती थी।

28 सहाबा को काफिर कहने वाला भी मुसलमान

''सहाबए कराम में से किसी की तकफ़ीर (सहाबा को काफिर कहने वाला) करे, वह सुन्नत जमाअ़त से ख़ारिज न होगा'' (फ़तावा रशीदिया, सफ़ा—276, तहरीर—रशीद अहमद गंगोही) और यही रशीद अहमद गंगोही लिखता है कि ''उलमा की तौहीन व तहक़ीर को चूँकि उलमा ने कुफ़्र लिखा है जो बवजह इल्म के और दीन के हो। लिहाजा जब क़यासें मुज्दहिद को हक़ न कहा तो अहानत इस अम्र की अम्रे दीन व इल्म है लिहाज़ा कुफ़्र हुआ फक़त'' (फतावा रशीदिया, सफ़ा—195)

देवबन्दियों के ही एक मौलवी साहब लिखते है कि चुनान्चे क़ाज़ी अयाज़ रहमतुल्लाह अलैह इसी हदीस के ज़ैल में शिफ़ा शरीफ़ के अंदर फ़रमाते हैं ''इसी तरह हर उस शख़्स के काफ़िर और इस्लाम से ख़ारिज बे—तअ़ाल्लुक होने का क़तई यक़ीन रखते हैं। जो कोई ऐसी बात कहे जिससे उम्मत की तज़लील या सहाबा की तकफीर होती हो'' (अकफारूल मुलहिदीन, सफ़ा—132 मतबुआ मकतबा लुधिथानवी कराची इशाअत सितम्बर 2003 ई., तहरीर : अनवर शाह कशमीरी देवबंदी)।

तब्सरह : आप अन्दाज़ा करें कि सहाबाए कराम, अम्बिया अलैहिस्सलाम के बाद सबसे बड़ा मर्तबा रखते हैं। इन लोगों के अक़ीदे के मुताबिक सहाबाए–कराम को गाली देने वाला मुसलमान और चौदहवीं सदी के मुल्ला की तौहीन करने वाला काफ़िर ये ईमान का कैसा तज़ाद है ? इससे इनकी सहाबा दुश्मनी और शीआ़ दोस्ती का पता चलता है।

29 हिन्दू त्यौहार होली या दीवाली का खाना दुरूस्त मगर ईद मीलादुन्बी और ग्यारहवीं बिदअत

''हिन्दू त्यौहार होली या दीवाली का खाना दुरूस्त है'' (फतावा रशीदिया, सफ़ा–614, तहरीर : रशीद अहमद गंगोही)। अशरफ़ अली थानवी देवबन्दी से एक आदमी ने सवाल किया कि अगर ग्यारहवीं की मिठाई आए तो उसको क्या करें , थानवी साहब ने फ़रमाया कि ''लेकर कहीं दफ़न कर दें'' (मलफ़ूज़ात हकीमुल उम्मत, ज़िल्द–23, सफ़ा–209) **सवाल** बच्चों की सालगिरह और उसकी ख़ुशी में अतआमुल तआम (खाना खिलाना) करना जाइज़ है या नहीं ? **जवाब** सालगिरह के वास्ते कुछ हरज नहीं और बाद साल के बवजह अल्लाह तआ़ला खिलाना भी दुरूस्त है''। (फतावा रशीदिया, सफा–606 तहरीर : रशीद अहमद गंगोही)।

सवाल : महफिले मीलाद में जिसमे रवायात सही पढ़ी जावें और लाफ़ो–ग़िजाफ (फिजूल बातें) और रवायात मौज़ुआ और काज़िबा (ग़लत और झूठी रवायात) न हों, शरीक होना कैसा है ? **जवाब** : नाजाइज़ बसबब और दोज़ख़ के (फतावा रशीदिया, सफा–273 तहरीर : रशीद अहमद गंगोही)।
तब्सरह : इन तमाम सवाल व जवाब को पढ़कर आपको अन्दाज़ा होगा कि हिन्दुओं के त्योहारों का खाना जाइज़ और नबीए करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के साथ बुग्ज़ व अ़नाद (दुश्मनी) का ये हाल, कि ऐसी महफ़िल जिसमें सही रवायात यानी नबीए पाक की सीरत बयान की जाती हो वह हर हाल में नाजाइज़ और ग्वारहवीं का खाना शायद इसलिए नहीं खाते कि .कुरआने पाक में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इर्शाद फ़रमाया ''तो खाओ उसमें से जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो अगर तुम उसकी आयतें मानते हो और तुम्है क्या हुआ कि उसमें से न ख़ाओं जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया'' (सूरए इनआम, आयत–118), ये अल्लाह तआला मुशरिकों से फ़रमा रहा है। आप अन्दाज़ा लगाएं कि ग्यारहवीं शरीफ़ के खाने पर .कुरआन पाक के अलावा कोई और चीज़ पढ़ी जाती है , लेकिन ये लोग नहीं खाते तो ये किसकी पैरवी कर रहे हैं ? ,

30 देवबन्दियों की मरग़ूब ग़िज़ा ''कव्वा'' खाना सवाब

सवाल : ''जिस जगह ज़ागे मारूफ़ा (आम कौआ) को अकसर हराम जानते हों और खाने वाले को बुरा कहते हों तो ऐसी जगह उस कौआ खाने वाले को कुछ सवाब होगा या, न सवाब होगा न अज़ाब होगा ? **जवाब** ''सवाब होगा'' (फतावा रशीदिया, सफ़ा–637, तहरीर–रशीद अहमद गंगोही)
तब्सरह : अब ज़रा नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीसे मुबारका सुन लें ''इब्ने उमर रदिअल्लाहु तआ़ला अन्हु से रिवायत है कि जो शख़्स कौआ खाता है तहकीक़ उसका नाम नबीए पाक ने फ़ासिक़ (गुनहगांर, बदकार) रखा है'' (इब्ने माजा शरीफ़) देवबन्दियों की इस मरग़ूब ग़िजा से अन्दाज़ा लगाया जा सकता है, कि कौआ खाने वाले मौलवी मौमिन होगें या फ़ासिक ?

31 रशीद अहमद गंगोही सबका मुरब्बी (पालने वाला)

मौलवी महमूदुल हसन देवबंदी ने रशीद अहमद गंगोही के मरने पर एक मर्शिया लिखा है जिसमें उन्होंने लिखा ''ख़ुदा उनका मुरब्बी, वो मुरब्बी थे खलाइक़ के .... मेरे मौला मेरे हादी थे बेशक शैख़े रब्बानी।'' (मर्शिया गंगोही सफ़ा–1 मतबुआ कुतबखाना रहीमिया देवबन्द, तहरीर : महमूदुल हसन देवबन्दी)
तब्सरह : मुरब्बी का मतलब पालने वाला, तो सोचें देवबंदियों का रशीद अहमद गंगोही के बारे में क्या अक़ीदा है कि वो सबका मुरब्बी, गोया उसे रब्बे काइनात बना दिया ? क्या यह सही तौहिद परस्ती है ? और इसी रशीद अहमद गंगोही का फ़तवा है कि :

सवाल मर्शिया जो ताज़िया वग़ैरह में शहीदाने करबला के पढ़ते हैं, अगर किसी शख़्स के पास हों, वो दूर करना चाहे तो उनकों जला देना मुनासिब है या फ़रोख़्त करना ? **जवाब** उनको जला देना या ज़मीन में दफ़न करना ज़रूरी है ''(फतावा रशीदिया, सफ़ा–616 तहरीर :रशीद अहमद गंगोही) मजीद ये कि उनके शैखुल हदीस मौलवी ज़करिया अपनी किताब में लिखते हैं – ''जब मेरी उमर ग़ालिबन् 10 बरस थी, मौलाना रशीद अहमद गंगोही के इन्तेक़ाल पर शैख़ुल हिन्द ने मर्शिया लिखा था। मेरे वालिद साहब ने कई हज़ार छपवाया और खूब मुफ़्त बाँटा था। मुझे भी क़रीब सब याद था। और खूब मज़े लेकर पढ़ा करता था और मेरे कान में ये पड़ा करता था कि ये शेर अगर हम कहैं तो हम काफिर हो जाएं मगर चूँकि शैख़ुल हिन्द ने कह दिया इसलिए कोई लब कुशाई नहीं करता''। (अकाबिर उलमा ए देवबंद इत्तेबा शरीअत की रौशनी में सफ़ा–13 से 14 मतबुआ–उमर पब्लिकेशन्ज़ उर्दू बाज़ार लाहौर इशाअत : सितम्बर 2004 तहरीर : मौलाना ज़करिया मुसन्निफ़ फज़ाएले आमाल) **तब्सरह** : अब ज़रा आखें बन्द करके ठण्डे दिल से गौर फरमाएं कि कितने प्यारे अंदाज़ में इस बात का तज़किरह हो रहा है, कि अगर ये मर्शिया कोई और लिखता तो हम उसे काफ़िर कहते लेकिन चूँकि ये मर्शिया शैखुल हिन्द मौलाना महमूदुलहसन देवबन्दी ने लिखा है, इसलिए किसी की जराअत नहीं कि वो उन्है काफ़िर कहै किसी शायर ने क्या खूब कहा है कि ''ख़िरद का नाम ज़ुनूँ रख लिया, जुनूँ का ख़िरद......................... जो चाहे आपका हुस्न करिश्मा साज़ करे''। (ख़िरद के मानी अकलमन्द और ज़ुनूँ के मानी पाग़ल या बेवकूफ़ होते है) इससे अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि इन लोगों ने दिये गये तमाम **अक़ाइद** को पढ़ने के बावजूद अपने मौलवियों के अलफाज़ का हमेशा दिफ़ा (हिफ़ाजत/बचाव) किया है और उनकी ग़ुस्ताख़ियों के बावजूद उनके अलफ़ाज पर कोई फतवा न दिया बल्कि उनके बख़ियादरी करने वाले आ़ला हज़रत इमाम अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा खाँ बरेलवी अलैहिर्रहमाँ पर बुहतान बाज़ियाँ और इल्ज़ाम तराशियों की भरमार करते रहे और इनकी दोरंगी देखिए कि इमाम हुसैन रदिअल्लाहु तआ़ला अन्हु के लिए लिख़े गये मर्शिये को जलाना ज़रूरी है और अपने मौलवी की शान में मर्शिया लिख डाला। जिसमें उसे ऐसे–ऐसे अलक़ाब दिए जो अम्बिया के लिए बोले जाते हैं। मजीद बराँ मौलाना मुहम्मद इदरीस कान्धालवी, मौलाना मीरशाह, मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ कामिलपुरी, मौलाना मुहम्मद यामीन उस्ताद जामेअ्–इस्लामिया डहाबील और हज़रत मौलाना युसुफ़ साहब बनौरी ने भी दो मर्शिए लिखे। (नक़्शे दवाँ सफ़ा–73 ता 74 तहरीर : मुहम्मद उन्ज़ुर शाह, इदारह तालीफाते अशरफ़िया मुलतान)

32 अल्लाह तआ़ला अफ़आ़ले क़बीहा (बुरे काम) कर सकता है

''अफ़आले क़बीहा (बुरे काम) मक़दूरे बारी तआ़ला (**अल्लाह की क़ुदरत में यानी अल्लाह कर सकता**) है'' (अलहैदुल मक़ल, सफ़ा–41, तहरीर : महमूदुल हसन देवबंदी)
तब्सरह : अस्तग़फिरूल्लाह ! ऐसा ग़न्दा अक़ीदा वह भी ज़ाते बारी तआ़ला के लिए, जिसका अपना इरशाद है ''तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए, जो तमाम जहानों का पालने वाला है'' (सूरह–फातेहा) मुसलमानों का अक़ीदा ये है कि अल्लाह तआ़ला, हर ऐब, नुक़्स और खामी (कमी/ख़राबी) से पाक है।

33 रसूल, जिन और मलाइका को ताग़ूत (शैतान) बोलना जाइज है

''इस मानी बमौजिब ताग़ूत जिन और मलाइका और रसूल को बोलना जाइज़ होगा'' (बलग़तुल हैरान, सफ़ा–43, तहरीर : हुसैन अली देवबंदी)
तब्सरह : फ़ीरोज़ुल्लुग़ात में ताग़ूत के मानी शैतान लिखे है तो इनके अक़ीदे के मुताबिक़ अल्लाह के फरिश्ते और रसूल जो हर गुनाह से पाक है, शैतान हैं। (मआ़ज अल्लाह) और शैतान का क्या काम इसी बलगतुल हैरान मे अगली आयत का तरजुमा करते हुए लिखता है कि शैतान उनको नूर (अच्छाई) की तरफ़ नहीं जाने देता। अगर ये कुछ नूर देख भी लें तो फिर भी शैतान उन्है उस तरफ नहीं जाने देता। (सफ़ा–43) पता चला, कि इन लोगों का भी यही हाल है कि इन बुरे अक़ाइद को

पढ़ने के बावजूद शैतान इन्है अच्छे अक़ाइद की तरफ नहीं जाने देता, इसलिए कि ये है ही देवबन्दी (यानी शैतान के पैरोकार)।

34 देवबंदियों को क़ल्बी (दिली) सुकून काबा में नहीं बल्कि गंगोह में मिलता है

''फिरे ये काबा मे भी पूछते गगोह का रास्ता .... जो रखते अपने सीनों में ये ज़ोको– शौक़े इरफ़ानी'' (मर्शिया गंगोह, सफ़ा–10, मतबुआ कुतुबखाना रहीमिया देवबंद, तहरीर : महमूदुल हसन देवबन्दी)।

तब्सरह : हर मुसलमान को काबा शरीफ जाकर सुकून मिलता है, लेकिन ये कहते हैं कि हम काबे में भी गंगोह का रस्ता पूछते थे। किस क़दर बदबख़्त लोग हैं जिनको काबा पहुँचकर मदीना शरीफ़ की हाज़िरी का भी ख़्याल न आया। अगर उनको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत होती तो गंगोह की बजाय मदीना शरीफ़ का नाम लेते।

35 लफ़्ज रहमतुल लिल्आलमीन सिफ़ते ख़ास्सह (वह सिफ़त जो किसी एक के लिए ख़ास मानी जाए) रसूल्लल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नहीं

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उलमा ए दीन, कि रहमतुल लिलआ़लमीन मख़सूस आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से है या हर शख़्स को कह सकते हैं ?

जवाब : लफ़्ज रहमतुल–लिल–आ़लमीन सिफ़ते ख़ास्सह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नहीं बल्कि दीगर औलिया व अम्बिया और उलमा ए रब्बानियीन मौजिब रहमते आलम होते हैं, अगरचे जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सबमें आला हैं। लिहाज़ा अगर दूसरे पर इस लफ्ज़ को बतावील बोल देवें तो जाइज़ है फक़त ''(फतावा रशीदिया सफ़ा–245 तहरीर : रशीद अहमद गंगोही)।

तब्सरह : हालाँकि रूहुल्लाह हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम के लिए, खलीलुल्लाह हज़रते इब्राहीम अलैहिस्सलाम के लिए, कलीमुल्लाह हज़रते मूसा अलैहिस्सलाम के लिए और
रहमतुल–लिल्–आलमीन सिर्फ नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ मख़सूस है। ये किसी और के लिए बोलना जाइज़ नहीं। हक़ीक़तन ये लोग अपने मौलवियों को नबी साबित करना चाहते हैं। एक और हवाला मुलाहिज़ा फरमाएं ''जिस वक्त से हज़रत गंगोही को हज़रत हाजी (इम्दादुल्लाह मुहाजिर मक्की) की वफ़ात की ख़बर मिली है, कई रोज़ तक मौलाना गंगोही को दस्त आते रहै इस क़दर रन्ज और सदमा हुआ था कि हज़रत गंगोही हज़रत (हाजी साहब) की निस्बत बार–बार रहमतुल–लिल्–आलमीन फ़रमाते थे''(मलफ़ूज़ाते हकीमुल उम्मत, जिल्द–1, सफ़ा–138 अज़ अशरफ़ अली थानवी) तो यें इबारतें पढ़िये और बार–बार तौबा कीजिए।

36 सैयदा फ़ातमतुज़्ज़हरा रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु की शान में ग़ुस्ताख़ी

''इन हज़रत की तो हर बात में कशिश होती है एक मर्तबा फरमाया कि हम एक दफ़ा बीमार हो गये। हमको मरने से बहुत डर लगता है, हमने ख़्वाब में देखा कि हज़रते फातिमा रदिअल्लाहु अन्हा ने हमको अपने सीने से चिम्टा लिया, हम अच्छे हो गए ''(अल्अफ़ाज़ातुल यौमिया, अशरफ़ अली थानवी देवबन्दी)

37 सैयदना इमाम हुसैन रदिअल्लाहु तआ़ला अन्हु की शान में ग़ुस्ताख़ी

मौलवी हुसैन अली देवबन्दी लिखता है कि ''कोर कोराना मर दूर करबला ....तानीफती चूँ हुसैन अन्दर बला'' (तर्जुमा : ऐ अन्धे–अन्धा होकर करबला में न जाना ताकि इमामे हुसैन की तरह मुसीबत में गिरफ़्तार न हो) बलग़तुल हैरान, सफ़ा–399 तहरीर : हुसैन अली देवबन्दी)

38 सैयदना इमाम हुसैन रदिअल्लाहु तआ़ला अन्हु की शान में गुस्ताख़ी

''इमामे हुसैन ने जमाअत में तफ़रक़ा (फूट) डाला और जमाअ़त से अलग होकर आप शैतान के हिस्से में चले गए'' (रशीद इब्ने रशीद सफ़ा–225, मौलिफ़ों नाशिर अबू यज़ीद मुहम्मदीन बट लुन्डा बाजार लाहौर) दूसरी जगह लिखता है ''पस हुसैन बाग़ी और बैत तोड़ने वाले ठहरे'' (रशीद इब्ने रशीद, सफ़ा–184) **तब्सरह** : नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इमाम हुसैन रदिअल्लाहु तआ़ला अन्हु को सरदारे नौजवानाने जन्नत का लक़ब अता फ़रमाया और आपकी शहादत की पेशीनगोई फ़रमाई। अब ज़रा इनके (देवबंदियों की) ग़लीज सोच पर ग़ौर फरमाएं कि ये लोग नबीए पाक के मुक़ाबिले में जन्नत के नौजवानों के सरदार को बाग़ी मआज़ अल्लाह अन्धा, शैतान के हिस्से में चले जाने वाला कहते हैं, हालाँकि ये लोग खुद ही देवबंदियों (यानी शैतान के जकड़े हुए) मे हैं।

39 बन्दा (यानी मै रशीद अहमद गंगोही) उनकी तकफ़ीर नहीं करता (देवबंदियों का अक़ीदा शीआ काफिर नहीं)

''बन्दा (यानी मै रशीद अहमद गंगोही) उनकी तकफ़ीर नहीं करता (उनको काफ़िर नहीं कहता)'' फतावा रशीदिया सफ़ा–296) तहरीर : रशीद अहमद गंगोही)

तब्सरह : ज़ाहिरन देवबन्दी यही ढोल पीटते हैं कि शीआ काफ़िर, शीआ काफ़िर और इन्हीं देवबन्दियों का फतवा है कि ''जो काफ़िर को काफ़िर न कहे वो खुद़ काफिर है'' (अशुदल अज़ाब, सफ़ा–8 मतबुआ मुज्तबाई जदीद देहली, तहरीर : मौलवी मुर्तुज़ा हसन)। अब खुद फैसला करें कि इन लोगों में काफ़िर कौन और मुसलमान कौन ? और यही रशीद अहमद गंगोही साहब फतावा रशीदिया सफ़ा–285 पर एक **सवाल** ताज़ियादारों और मर्शियाखानों और वे नमाज़ियों के जनाज़े पढ़ना जाइज है या नहीं ? के **जवाब** में लिखते है ये लोग फासिक है और फ़ासिक की जनाज़ा में नमाज़ वाजिब है ज़रूर पढ़ना चाहिए''।

नोट : ताजियादारों मर्शियाख्वानों ''शिया'' को कहते है ''मजीद अकीदा न. 76 देखिए''।

40 क्या अल्लाह तआ़ला देखने वाला और सुनने वाला नहीं है ?

''हाँलाकि हुनूज़ अल्लाह तआ़ला ने उन लोगों को तो देखा ही नहीं जिन्होंने तुममें से जिहाद किया हो (तर्जुमा .क़ुरान पाक पारा–4 सूरह आले इमरान आयत–142 अशरफ अली थानवी)?

41 क्या अल्लाह तआला भी दाँव करता है

''वह भी दांव करते थे और अल्लाह तआला भी दाँव करता था और अल्लाह का दाँव सबसे बेहतर है'' (तर्जुमा .क़ुरआ़न पारा–1 सूरह अन्फाल आयत–30, महमूदुल हसन देवबन्दी) ।

42 हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मासूमों के सरदार या गुनहगार ?

''हमने फैसला कर दिया तेरे वास्ते सरीह (वाजेह) ताकि मुआफ़ करे तुझको अल्लाह जो आगे हो चुके तेरे ग़ुनाह और जो पीछे रहे'' (तर्जुमा–.क़ुरान–पारा–26 सूरह–फतह आयत 1 ता 2 अज़ महमूदुल हसन देवबन्दी) ।

तब्सरह : यानी इन के इस कुफ़रिया तरजुमा से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर यह झूठा इल्ज़ाम लगाया कि न सिर्फ़ आपकी पिछली ज़िन्दगी गुनाहों में मुब्तिला थी बल्कि आइंदा ज़िन्दगी भी गुनाहों मे डूबी होगी जब कि अम्बिआ सारे मासूम हैं और हमारे आक़ा उनके सरदार जिन के बारे मे अल्लाह फ़र्माता है कि ''तुम्हारे साहिब ना बहके न बे राह चले और वो कोइ बात अपनी ख्वाहिश से नही करते वो तो नही मगर वही जो उन्हे आती है''(आयत नं. 2–3 सूरह नजम पारा 27)

अगर इनका ये अक़ीदा मान लिया जाए तो न सिर्फ़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की शान मे गुस्ताखी़ बल्कि आयतें आपस मे टकराती हैं ।

43 अम्बिया को गाँव का चौधरी कह दिया

''जैसा कि गाँव का चौधरी और गाँव का जमींदार सो इन मानों में हर पैग़म्बर अपनी उम्मत का सरदार है'' (तक़वीयतुल ईमान मय तज़कीरूल उख्वान सफ़ा–85)
तब्सरह : गाँव के चौधरी में तो बहुत सी ख़ामियां मसलन झूठ, नाइंसाफी, बदकारी, मुमकिन हो सकती है ऐसे लोगों को नबीए पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ मिलाना कहाँ का इंसाफ़ है ? जबकि अम्बिया मासूम और हर ग़ुनाह से पाक होते हैं।

44 देवबन्दी उलेमा को लडकों से इश्क होना, कासिम नानौतवी की बारगाह अल्लाह की बारगाह है

''मौलाना मंसूर अली खाँ ने फ़रमाया मुझे एक लड़के से इश्क हो गया। रात–दिन उसी के तसव्वुर में ग़ुज़रने लगे। मौलाना नानोतवी से शिक़ायत की, उन्होंने फ़रमाया–बाद नमाज़ मग़रिब जब मैं नमाज़ से फारिग़ हो जाऊँ, तो आप मौजूद रहैं। मैं नमाज़े मग़रिब पढ़कर छत्ता की मस्जिद में बैठा रहा। जब हज़रत सलातुल अव्वाबीन से फ़ारिग़ हुए तो आवाज़ दी–मौलवी साहब। मैंन अर्ज़ किया हज़रत हाजिर हूँ। फ़रमाया हाथ लाओ, मैनें हाथ बढ़ाया। मेरा हाथ अपने बाएं हाथ की हथेली पर रखकर मेरी हथेली से इस तरह रगड़ा जैसे बान बरे जाते हैं। ख़ुदा की क़सम मैने अयानन देखा कि मैं अर्श के नीचे हूँ और हर चहार तरफ़ से नूर और रौशनी ने मेरा इहाता कर लिया है ग़ोया मै दरबारे इलाही में हाजिर हूँ।'' (अरवाहे सलासा हिकायत–251 सफ़ा–215 मतबुआ मकतबा अल हसन उर्दू बाजार लाहौर, तहरीर : अमीर शाह खान क़ारी मुहम्मद तैयब, अशरफ़ अली थानवी)
तब्सरह : देवबन्दी मौलवी हाथ पर हाथ रगड़े तो अर्शे मुअल्ला तक पहुँचा दे और इनके अक़ीदे के मुताबिक जिसका नाम मुहम्मद या अ़ली हो, वह किसी चीज का मुख़्तार नहीं (अक़ीदह नम्बर–17)।

45 मौलवी क़ासिम नानोतवी देवबन्दियों का ख़ुदा

मौलाना हसन साहब बड़े मौक़ूली थे और किसी को इस मैदान में अपना हम अस्र नहीं समझते थे। एक दिन हज़रत नानोतवी का वाज़ हुआ और इत्तेफाक़ से सामने वही (मौलवी अहमद हसन) थे और मुख़ातिब बन गए और माक़ूलात ही के मसाइल का रद शुरू हुआ। वाज़ के बाद उन्होंने कहा–अल्लाहु अकबर ये बातें किसी इन्सानी दिमाग़ की नहीं हो सकतीं। ये तो ख़ुदा ही की बातें हैं। (अरवाहे सलासा हिकायत–245 सफ़ा–211 तहरीर : अमीर शाह खाँ, कारी मुहम्मद तैयब अशरफ़ अली थानवी) **तब्सरह** : यानी मौलवी क़ासिम नानोतवी साहब इन्सान नहीं बल्कि ख़ुदा थे या फिर उन पर वही नाज़िल होती थी।

46 कासिम नानौतवी फ़रिश्ता मुकर्रब था

मौलवी निजामुद्दीन ने फ़रमाया कि मै पच्चीस बरस हज़रत मौलाना नानौतवी की ख़िदमत में हाज़िर हुआ हूँ और कभी बिला वुज़ू नहीं गया। मैने इन्सानियत से बालादरजा उनको देखा, वह शख़्स एक फ़रिश्ता मुक़र्रब था जो इन्सानों में ज़ाहिर किया गया।'' (अरवाहे सलासा हिकायत–245 सफ़ा–211 तहरीर : अमीर शाह खाँ, क़ारी मुहम्मद तैयब, अशरफ़ अली थानवी) और दूसरी जगह लिखा कि मौलवी नानौतवी साहब की तमाम ख़सलतें फ़रिश्तों की सी थीं। (तारीखे दारूल उलूम देवबंद सफ़ा–106)
तब्सरह : लेकिन अम्बिया और औलिया के बारे में ये अक़ीदा, कि औलिया और अंबिया अल्लाह की शान के रूबरू एक ज़र्जए नाचीज़ से भी कमतर हैं ? (अक़ीदह नम्बर–23)।

47 हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की तौहीन

देवबंदियों के नज़्दीक रशीद अहमद गंगोही के हक़ीर और झूठे से काले ग़ुलाम का लक़ब यूसुफ सानी है महमूदुल हसन देवबन्दी रक़मतराज़ है– क़बूलियत इसे कहते हैं, मक़बूल ऐसे होते हैं, उबैद सउद, इनका लक़ब है यूसुफ सानी'' (मर्शिया गंगोही, सफ़ा–10)

तब्सरह : तो आप सोचें जब मिस्टर गंगोही के हक़ीर ग़ुलाम का लक़ब युसूफ़ सानी है तो उनके अपने हुस्नो जमाल का क्या आ़लम होगा ? इस शेर में हज़रते यूसुफ़ की सरीह तौहीन है

48 कासिम नानौतवी को इल्मे ग़ैब

''मौलवी अहमद हसन और मौलवी फख़रूल हसन में बाहम मुआ़सराना चशमक (टसल) थी ओर उसने बाज़ हालात की बिना पर एक मुखासिमत और मुनाज़िअत इख्तियार कर ली और मौलाना महमूदुल हसन जो असल झगड़े में शरीक न थे मगर सूरते हाल ऐसी पेश आई, कि मौलाना किसी एक जानिब झुक गये और ये वाक़िया तूल पकड़ गया। उसी दौरान में एक दिन अलस्सुबह बाद नमाज़ फज़र, मौलाना रफ़ीउद्दीन ने मौलाना महहूदुल हसन को अपने हुज़रे में बुलाया। (जो दारूल उलूम देवबन्द में है) मौलाना हाज़िर हुए, मौसम सख़्त सर्दी का था। मौलाना रफीउद्दीन ने फ़रमाया पहले मेरा ये रूई का लबादा देख लो। मौलाना (महमूदुल हसन) ने लिबादा देखा तो वह तर था और खूब भीग रहा था। फरमाया कि अभी–अभी मौलाना नानौतवी जस्दे उन्सरी (असली जिस्म के साथ) मेरे पास तशरीफ लाए थे जिससे मैं एकदम पसीना–पसीना हो गया और मेरा लबादा बर–बतर हो गया और ये फ़रमाया–कि महमूदुल हसन को कह दो वह इस झगड़े में न पड़े। बस, मैने ये कहने के लिए बुलाया है मौलाना महमूदुल हसन ने अर्ज किया कि हज़रत मै आपके हाथ पर तौबा करता हूँ और उसके बाद मै इस क़िस्से में कुछ न बोलूँगा'' (अरवाहे सलासा, हिकायत–247, सफ़ा 212 मतबुआ मकतबा अल हसन उर्दू बाज़ार लाहौर तहरीर– अमीरशाह खाँ , क़ारी मुहम्मद तैयब, अशरफ़ अली थानवी) **फतावा रशीदिया** में रशीद अहमद गंगोही ने लिखा है कि ''ये अक़ीदा रखना किं आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इल्मे ग़ैब था, सरीह शिर्क है'' लेकिन अजीब बात है कि इनके बीच मौलवी साहब को क़ब्र में भी पता चल गया कि मदरसा देवबन्द में लड़ाई हुई है और उन्होंने आकर हाजत रवाई भी फ़रमाई जबकि नबीए पाक का इल्मे ग़ैब मानने वालों को ये मुशरिक कहते हैं। सिर्फ़ इतना ही नहीं हुज़ूर सल्लललाहु अलैहि व सल्लम के बारे मे यह अक़ीदा कि जिसका नाम मुहम्मद या अली है वो किसी चीज़ के मुख्तार नहीं और हुज़ूर सल्लललाहु अलैहि व सल्लम मर के मिट्टी मे मिलने वाले हैं और इनके मौलवी जब चाहें अपनी क़ब्र से उठ कर अपने जिस्म के साथ जहान चाहें पहुँच सकते हैं बल्कि मरने के बाद देवबन्दिओं की मदद भी फ़र्माते हैं।ये कैसा इन्साफ़ है।

49 तक़वीयतुल ईमान मुसलमानों को लड़ाने के लिए लिखी गई

मौलवी इस्माईल देहलवी ने तक़वीयतुल ईमान लिखने के बाद अपने ख़ास–ख़ास लोगों को जमा किया और उनके सामने तक़वीयतुल ईमान पेश की और फ़रमाया कि मैनें ये किताब लिखी है और मैं जानता हूँ कि इसमें बाज़ जगह ज़रा तेज़ अल्फ़ाज़ भी आ गए हैं और बाज़ जगह तशद्दुद भी हो गया मसलन उमूर को जो शिर्क ख़फ़ी थे शिर्क जली लिख दिया गया इन वुजूह से मुझे अन्देशा है कि इसकी इशाअ़त से शोरिश ज़रूर होगी मैने ये किताब लिख दी गो इस से शोरिश होगी मगर तवक़्क़ो है कि लड़ भिड़ कर खुद ठीक हो जाएँगे (अर्वाहे सलासह हिकायत 59),

तब्सरह : आप इस की इल्मी बद दियानती पर गौर फ़र्माएँ कि शिर्क जली को खफ़ी और खफ़ी को जली लिख दिया हालाँकि जली और ख़फ़ी के लिए शरीअत में अलग अहकामात हैं। मसलन अगर इमाम नमाज़े ज़ुहर में क़िरअत जली (ऊँची आवाज से) करे या फ़जर, मगरिब और इशा मे ख़फ़ी (खामोश) किरअत करे तो सज्दा सहफ़ लाज़िम है और जानबूझ कर ऐसा करने से नमाज़ नहीं होती।

50 देवबन्दी उलमा की निराली गन्दी आदात

मौलाना हबीबुर्रहमान ने बयान फरमाया कि एक दफ़ा गंगोह की ख़ानक़ाह में मजमा (भीड़) था। हज़रत गंगोही और हज़रत नानौतवी तशरीफ़ फ़रमा थे, कि हज़रत गंगोही ने हज़रत नानौतवी से मुहब्बत आमेज़ लहजा में फ़रमाया कि यहाँ ज़रा लेट जाओ। हज़रत नानौतवी कुछ शर्मा से गए, मगर हज़रत (गंगोही) ने फिर फ़रमाया, तो मौलाना बड़े अदब से चित लेट गये। हज़रत भी उसी चारपाई पर लेट गए और मौलाना की तरफ़ करवट करके अपना हाथ उनके सीने पर पर रख दिया जैसा कि आशिक सादिक (सच्चा आशिक) अपने क़ल्ब को तसकीन दिया करता है मौलाना (नानौतवी) हरचन्द फरमाते है कि मियाँ क्या कर रहे हो, ये लोग क्या कहैगें। हज़रत ने फ़रमाया–कि लोग कहेंगे तो कहने दो। (अरवाहे सलासा हिकायत 305 सफ़ा–248 तहरीर : अमीर शाह खाँ, कारी मुहम्मद तैयब, अशरफ अली थानवी)

तब्सरह : ये लोन्डेबाजी नही ंतो और क्या है ? और ये इतना ख़तरनाक फ़ेले बद (बुरा काम) है जिससे इन्सान तो इन्सान, शैतान भी ख़ौफ खाता है चुनाँचे हज़रते सैयदना इब्नेअब्बास रदिअल्लाहु अन्हु का बयान है कि जब मर्द, मर्द पर सवार होता है तो शैतान इस ख़ौफ़ से भाग जाता है कि कहीं ये लानत उस पर न आ जाए।

51 देवबन्दी उलेमा का क़श्फ और इस्माईल देहलवी का उन पर फतवए कुफ्र

एक मर्तबा मौलाना मुहम्मद याकूब साहब ने छत्ता की मस्जिद में फ़रमाया जबकि लोगों का मजमा था, कि भाई आज हम तो सुबह की नमाज़ में मर जाते, बस कुछ ही क़सर रह ग़ई। अर्ज़ किया गया–क्या हादसा पेश आया। फ़रमाया कि आज सुबह की नमाज़ में सूरए मुज़म्मिल पढ़ रहा था, कि अचानक उलूम का अज़ीमुश्शान दरिया मेरे क़ल्ब के ऊपर से गुज़रा कि मै तहम्मुल न कर सका। करीब था कि मेरी रूह परवाज़ कर जाए मगर वो दरिया जैसा कि एक दम आया वैसा ही निकला चला गया, इसलिए मै बच गया। नमाज के बाद मैने ग़ौर किया कि ये क्या मामला था तो मुनकशिफ़ हुआ कि हज़रत मौलाना नानौतवी उन साअ़तों में मेरी तरफ़ मेढ़ में मुतवज्जेह हुए थे, ये उनकी तवज्ज़ेह का असर था। फिर फ़रमाया अल्लाहु अकबर जिस शख़्स की तवज़्जह का ये असर है कि उलूम के दरिया दूसरे के क़ल्बों पर मौजे मारने लगे तो उस शख्स के क़ल्ब की उसअत व कुव्वत का क्या हाल होगा ?'' (अरवाहे सलासा हिकायत 268)

तब्सरह : लेकिन इसके बर अ़क्स अगर देवबंदी मज़हब की बुनियादी किताब तक़वीयतुल ईमान को देखा जाए तो मौलवी याकूब तो पक्का मुशरिक और झूठा साबित होता है इस्माईल देहलवी तक़वीयतुल ईमान में लिखता है– कि जो कोई ये दावा करे कि मेरे पास ऐसा कुछ इल्म है कि जब मैं चाहूँ उससे ग़ैब की बात मालूम कर लूँ, सो वह बड़ा झूठा है कि दावा ख़ुदाई का रखता है'' (तक़वीयतुल ईमान, सफ़ा–21)। जैसा कि मौलवी याकूब साहब ने न जाने कितने मील दूर बैठे हूए मौलवी क़ासिम नानौतवी को देखकर ये बात दरयाफ्त कर ली कि उन्होंने मेरी तरफ़ तवज़्ज़ो फ़रमाई थी। दूसरी जगह इस्माईल देहलवी ने लिखा–''जो ये अक़ीदा रखे कि जो ख़्याल व वहम मेरे दिल में गुज़रता है वह सबसे वाक़िफ़ है, सो इन बातों से मुशरिक हो जाता है'' (तक़वीयतुल ईमान, सफ़ा–14) अब इस उसूल के तहत इन दोनों के बारे में आपका क्या ख़्याल है ? तहरीर वाज़ेह करती है कि दोनों मुशरिक हैं।

51 गंगोही हर बात ख़ुदा के हुक्म से करते थे

''हज़रत मौलाना गंगोही ने मौलवी मुहम्मद याहिया साहब से फ़रमाया कि फलाँ मसला शामी में देख़ो। मौलवी साहब ने अर्ज किया कि हज़रत वह मसला शामी में तो है नहीं। फ़रमाया ये कैसे हो सकता है, लाओ शामी उठा लाओ। शामी (किताब) लाई गई, हज़रत (रशीद अहमद गंगोही) उस वक्त आँखों से माज़ूर हो चुके थे। शामी के दो सुलुस औराक़ दाएं जानिब करके और एक सुलुस बाई जानिब करके इस अन्दाज़ से किताब एक दम ख़ोली और फ़रमाया कि बायीं तरफ़ के सफ़े पर नीचे की जानिब देखो। देखा, तो वह मसला उसी हिस्से में मौज़ूद था। सबको हैरत हुई (कि गंगोही

साहब तो आँख़ों से अंधे हैं) हज़रत (गंगोही) ने फ़रमाया—कि हक तआ़ला (अल्लाह तआ़ला) ने मुझसे वादा फ़रमाया कि मेरी ज़ुबान से ग़लत नहीं निकलवाएग़ा'' (अरवाहे सलासा हिकायत—308, तहरीर : अशरफ़ अली थानवी)

तब्सरह : इस किज़्ब बयानी (झूठ बोलने) पर लोगों को शर्मिन्दा होना चाहिए। पहला सवाल तो ये है, कि अल्लाह तआला के साथ इन्है हम—कलामी का शर्फ़, कब और कहाँ हासिल हुआ ? कि उसने इनसे वादा फ़रमा लिया, दूसरो सवाल ये है कि इस ऐलान से आख़िर गंगोही साहब का मुद्दआ क्या है ? काफ़ी ग़ौरो—फिक़्र के बाद हम इस नतीजे पर पहुचे हैं कि उन्होंने आम लोगों को ये तआ़स्सुर देने की नाकाम क़ोशिश की है, कि ख़ुदा के यहाँ उनका मुक़ाम बशरियत की सतह, और अम्बिया से भी ऊँचा है क्यूँकि देवबन्दियों का अक़ीदा है कि उनसे भी ग़लती हो सकती है, जैसा कि थानवी साहब लिखते है—''तहक़ीक़ की ग़लती विलायत बल्कि नबूवत के साथ भी जमा हो सकती है'' (फतावा इम्दादिया सफ़ा—62, जिल्द—2 मतबुआ—इन्डिया) ये सवाल भी पैदा होता है कि क्या गंगोही साहब पर वह़ी नाज़िल होती थी ? कि अल्लाह ने वादा किया ?

52 देवबन्दियों के बुजुर्ग मुशरिक थे

''रशीद अहमद गंगोही से सवाल हुआ कि नबी बख़्श, पीर बख़्श, सालार बख़्स ऐसे नामों का रखना कैसा है ? **जवाब** ऐसे नाम मौहम शिर्क हैं'' (फतावा रशीदिया, सफ़ा—209) अब दूसरी तरफ़ एक और तहरीर मुलाहिज़ा फ़रमाएं—''रामपुर चूँकि हज़रत .क़ुद्स सिर्रह (रशीद अहमद गंगोही) की अधियान और आपके दादा क़ाजी पीर बख़्श साहब का असल मसकन था। इसलिए रूहानी तरबियत का सिलसिला इधर मुस्तक़िल हुआ'' (तज़किरतुल रशीद जिल्द—1, सफ़ा—26 मतबुआ इदारा इस्लामियात लाहौर, तहरीर – आशिक़ुल हया मेरठी)

तब्सरह : फ़ैसला आप फरमाएँ कि गंगोही साहब के दादा जान मुसलमान थे या फिर मुशरिक ?

53 नबीए पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का चेहरए मुबारक बैयनह अनवर शाह कशमीरी देवबन्दी का चेहरा

''मौलाना अहमद साहब लाहौरी के साहबज़ादे बयान करते हैं—मैने ख़्वाब में देखा कि आफ़ताब टूटकर ज़मीन पर गिर पड़ा। मग़रिब की नमाज़ हज़रत शाह की ख़ानक़ाह की मस्ज़िद में अदा की और बाद नमाज़ इन साहबज़ादे ने अपना ये ख़्वाब हज़रत (अनवर शाह काशमीरी देवबन्दी) को सुनाया, सुनकर फ़रमाया—कि भाई किसी बहुत बड़े आ़लिम की वफ़ात होगी और मुम्किन है कि मेरी ही हो। मौलवी अब्दुल वाहिद साहब ने एक रात ये ख़्वाब देखा कि एक जनाज़ा है और उसके पीछे इतना बड़ा हुजूम जिसे शुमार करना भी मुमकिन नहीं। मख़लूक़ जनाज़े के पीछे दौड़ रही है और हुजूम (भीड़) बढ़ता ही जा रहा है मैं भी इसी हुजूम में शरीक हो गया और लागों से पूछा कि ये किसका जनाज़ा है ? बताया गया कि ये जनाब रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जनाज़ा है जिसे लोग तबर्रूकन और हुसूले बरकत के लिए और कान्धा देने के लिए दौड़ रहे है। मैनें हुजूम से कहा कि ज़रा ठहरो। ठहरो। मैं जनाब रसूले अकरम के चेहरए अनवर की ज़ियारत करना चाहता हूँ। मेरी बेक़रारी पर जनाज़ा मुबारक़ ज़मीन पर रख़ दिया गया और हुजूम लाश मुबारक के क़रीब सिमटने लगा। मैनें चेहरए मुबारक से चादर हटाई तो वह बैयनह चेहरा हज़रत मौलाना अनवर शाह काशमीरी रहमतुल्लाह अलैह का था।'' (नुक़ूशे दवाँ हयाते मुहद्दिस कशमीरी, सफ़ा—75 मतबुआ इदारा तालीफ़ाते अशरफिया मुलतान तहरीर : मौलाना मुहम्मद अन्ज़र शाह)

तब्सरह ज़रा गौर फ़रमाएँ कि नबी ए पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ज़नाज़ा जा रहा है और जब देखा तो वह अनवर शाह कशमीरी का चेहरा था यानी दूसरे लफ़्ज़ों में अनवर शाह कशमीरी को किस अज़ीम ज़ात के साथ मिला दिया गया। अल्लाह ऐसे ग़न्दे **अक़ाइद** से बचाए।

54 रशीद अहमद गंगोही देवबन्दी का नबी होने का झूठा दावा

आपने (यानी रशीद अहमद गंगोही) कई मर्तबा बहैसियत तबलीग, ये अलफ़ाज़ ज़बाने फ़ैज़े तर्जुमान से फ़रमाए – सुन लो ! हक वही है, जो रशीद अहमद की ज़ुबान से निकलता है और क़सम कहता हूँ कि मैं कुछ नही हूँ मगर इस ज़माने में हिदायत व निजात मौकूफ (निर्भर) है मेरी इत्तेबा (पैरवी) पर'' (तज़किरतुर्रशीद, जिल्द–2 सफ़ा–17)

तब्सरह : **क्या कोई गैर ए नबी भी ये कह सकता है?** पासदारी के जज़्बे से अलग होकर सिर्फ एक लम्हे के लिए सोचिए, वह यह नहीं कह रहा है कि रशीद अहमद की ज़ुबान से जो कुछ निकलता है वह हक़ है बल्कि उनके ज़ुमले का मफ़हूम ये है कि हक़ सिर्फ रशीद अहमद की ज़ुबान से ही निकलता है दोनों का फर्क यूँ महसूस कीजिए, कि पहले ज़ुमले को सिर्फ खिलाफ़े वाक़ेआ कहा जा सकता है, लैकिन दूसरा जुमला तो खिलाफ़े वाकेआ होने के साथ–साथ इस दौर के तमाम पेशवायाने इस्लाम की हक़गोई को एक खुला हुआ चेलेन्ज भी है यानी मतलब ये है कि इस ज़माने में मौलवी रशीद अहमद गंगोही के अलावा किसी की जुबान भी हक़ से आशना नहीं हुई और निज़ात सिर्फ गंगोही की ही पैरवी पर है, हालाँकि निज़ात अल्लाह और उसके रसूल और सहाबा की पैरवी में है।

55 क़ल्ब के वसवसे भी जान लेते हैं!

''मौलाना ख़लीलुर्रहमान फरमाते है जिस ज़माने में हज़रत (रशीद अहमद गंगोही) की ख़िदमत में हदीस पढ़ता था। एक तालिबे इल्म ''वली मुहम्मद'', बेचारे बहुत मिस्कीन और पारसा शख़्स थे, उनको एक या दो फ़ाक़ा की नौबत भी पहुँची थी, मगर उन्होंने किसी से न ज़िक्र किया और न किसी ये सूरत हाल किसी पर ज़ाहिर हुआ। इसी हालत में सुबह के वक़्त बग़ल में किताब दबाए पढ़ने के वास्ते हज़रत (गंगोही) की ख़िदमत में आ रहे थे, कि रास्ते में हलवाई की दुकान पर गरम–गरम हलवा पक रहा था। ये कुछ देर वहाँ खड़े रहे कि कुछ पास हो तो ख़ाएं मगर पैसा भी न था। इसलिए सब्र करके चल दिये और ख़ानक़ाह में पहुँचे। हज़रत (गंगोही) गोया उनके मुन्तज़िर (इन्तेजार में) बैठे थे, सलाम का जवाब देते ही फ़रमाया–मौलवी वली मुहम्मद, आज तो हलवा खाने को हमारा जी चाहता है लो ये चार आना ले जाओ और जिस दुकान से तुमको पसन्द हो वहीं से लाओ। अलगरज़ मौलवी वली मुहम्मद, उसी दुकान से हलवा खरीद कर लाए और हज़रत के सामने रख़ दिया। हज़रत ने इरशाद फ़रमाया–मियां वली मुहम्मद, मेरी खुशी यह है कि इस हलवा को तुम्ही खा लो। मौलवी वली मुहम्मद इस किस्से के बाद फ़रमाया करते थे, कि हज़रत (गंगोही) के सामने जाते मुझे बहुत डर मालूम होता है क्यूँकि क़ल्ब के वसाविस इख़्तियार में नहीं और हज़रत उन पर मुतलेअ हो जाते हैं''– (तज़किरतुर्रशीद, जिल्द–2 सफ़ा 227 तहरीर आशिक इलाही मेरठी)।

तब्सरह : लेकिन इनके मौलवी इस्माईल देहलवी ने लिखा है–''जो ये अक़ीदा रखे, कि जो ख्याल व वहम मेरे दिल में गुजरता है वह सबसे वाक़िफ़ है सो इन बातों से मुशरिक हो जाता है'' (तक़वीयतुल ईमान, सफ़ा–14)। यानी घर का फतवा घर में हीं काम आ गया।

56 देवबन्दी उलेमा रंडियों के पीर और रन्डियों से उनकी मोहब्बत

''(रशीद अहमद गंगोही ने) एक बार इर्शाद फ़रमाया कि ज़ामिन अली जलालाबादी की सहारनपुर में बहुत रन्डियाँ, मुरीद थीं। एक बार ये सहारनपुर में किसी रन्डी (तवायफ) के मकान में ठहरे हुए थे। सब मुरीदनियाँ अपने मियाँ साहब की ज़ियारत के लिये हाज़िर हुईं। मगर एक रन्डी नहीं आई। मियाँ साहब बोले कि फलानी क्यूँ नहीं आई (पीर साहब को एक–एक रन्डी की खबर थी) रन्डियों नें जबाब दिया कि मियाँ साहब हमने उसे बहुतेरा कहा कि चल, मियाँ साहब की ज़ियारत को। उसने कहा–मैं बहुत गुनहगार हूँ, मियाँ साहब को क्या मुँह दिखाउँगी। मैं जियारत के क़ाबिल नहीं। मियाँ साहब ने कहा–नही जी ! तुम उसे हमारे पास ज़रूर लाना। चुनाँचे रन्डियाँ उसे लेकर आईं, जब वह सामने आई, तो मियाँ साहब ने पूछा–बी तुम क्यूँ नहीं आईं थीं ? उसने कहा–हज़रत रूसियाही की वजह से ज़ियारत को आती हुई शरमाती हूँ। मियाँ साहब बोले बी तुम क्यूँ शरमाती हो, करने वाला कौन और कराने वाला कौन वह तो वही है (यानी अल्लाह तआ़ला)। रण्डी ये सुनकर आग हो गई और ख़फ़ा

होकर कहा ला हव्ला वला कुव्वता अगरचे, मैं रूसियाह और गुनाहगार हूँ मगर ऐसे पीर के मुँह पर पेशाब भी नहीं करती। मियाँ साहब तो शर्मिन्दा होकर सर निगूँ रह गये और वह उठकर चल दी। (तज़किरतुर्रशीद, जिल्द–2, सफ़ा–242)

तब्सरह : उलमा ए देवबन्द के पीरों की करतूत ऐसी है तो आम अवाम का क्या हाल होगा ? इससे आप इनके मौलवियों के ज़ाहिर और बातिन का अन्दाज़ा लगा सकते हैं कि ये अक़ाइद में ही नहीं, आ़माल में भी दोग़ले हैं। ''हाथी के दाँत ख़ाने के और, और दिखाने के और।''

57 रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम राह से भटके हुए

और पाया तुझको (नबीए करीम को) भटकता, फिर राह समझाई (तर्जुमा : .क़ुरआ़न सूरह–वद्दुहा, आयत–7 अज़ महमूदुल हसन देवबन्दी)

तब्सरह देखिए अक़ीदा नं. 42

58 रशीद अहमद गंगोही कमालात में ईसा अलैहिस्सलाम से आगे थे

महमूदुल हसन देवबन्दी, रशीद अहमद गंगोही के बारे में लिखता है कि ''मुर्दों को ज़िन्दा किया और ज़िन्दो को मरने न दिया इस मसीहाई को देखें इब्ने मरियम'' (मर्शिया गंगोही सफ़ा–23 मतबुआ कुतुबखाना रहीमिया देवबन्द तहरीर : महमूदुल हसन देवबन्दी)

तब्सरह : इस शेर मे महमूदुल हसन देवबन्दी ने इब्ने मरियम हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम को रशीद अहमद गंगोही की मसीहाई को दिखाते हुए फरमाया है, कि ऐ इब्ने मरियम तुमने सिर्फ एक काम किए और हमारे रशीद अहमद ने दो काम क़िए मुर्दों को ज़िन्दा भी किया और ज़िन्दों को मरने नहीं दिया। मआज़–अल्लाह। किस क़दर ग़ुस्ताख़ी है, हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम की शान मे।

59 गंगोही ख़ुदा की मिस्ल या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मिस्ल

''ज़बान पर अहला अहवा की है क्यूँ ऊल बुबूल शायद उठा आलम से कोई बानी इस्लाम का सानी'' (मर्शिया गंगोही सफ़ा–5 तहरीर : महमूदुल हसन देवबन्दी)

तब्सरह इस शेर में मौलवी महमूदुल हसन ने रशीद अहमद गंगोही को बानी इस्लाम का सानी (मिस्ल या दूसरे इस्लाम का Founder) लिखा है और ये भी कहा है कि उनकी मौत के वक़्त ऊल बुबुल के नारे बुलन्द हुए। अब गौर तलब बात ये है कि देवबन्दी मज़हब में बानी इस्लाम अल्लाह तआ़ला है, जैसा कि अशरफ़ अली थानवी ने अपने वाज़ ज़िक्ररूर्रसूल मतबुआ कानपुर, सफ़ा–22 पर लिखा है कि बानी इस्लाम ख़ुदाए तआ़ला है तो मालूम हुआ कि देवबन्दियों के नज़दीक रशीद अहमद गंगोही ख़ुदा की मिस्ल है और थानवी से इख़्तिलाफ़ करके बानीए इस्लाम से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुराद लें तो गंगोही जी कम–अज़–कम दूसरे रसूल हूए या मिस्ल रसूल हुए।

60 गंगोही की क़ब्र मिस्ले दूर है और वह खुद ख़ुदा है

महमूदुल हसन देवबन्दी, रशीद अहमद गंगोही के बारे में लिखता है ''तुम्हारी तुर्बते अनवर को देकर तूर से तशवीह, कहूँ हूँ बार–बारानी मेरी देखी भी नादानी'' (मर्शिया गंगोही, सफ़ा–13 तहरीर : महमूदुल हसन देवबन्दी)

तब्सरह : महमूदुल हसन देवबन्दी ने जब रशीद अहमद गंगोही को मुरब्बी–ए–खलाइक माना ओर बानिए इस्लाम का सानी कहा तो उनकी क़ब्र को तूर से तशबीह देकर ख़ुद अरनी कहने वाला मूसा बने और गंगोही को ख़ुदा बनाया।

61 गंगोही का हुक्म खुदा के हुक्म से भारी है

महमूदुल हसन देवबन्दी, रशीद अहमद गंगोही के बारे लिखता है– ''न रूका, पर न रूका, पर न रूका, पर न रूका .... उसका जो हुक्म जो हुक्म था, था क़ज़ाए मबरम'' (मर्शिया गंगोही, सफ़ा–22 मतबुआ कुतुबखाना रहीमिया देवबंद, तहरीर : महमूदुल हसन देवबन्दी)
तब्सरह : इस शेर में महमूदुल हसन देवबन्दी ने गंगोही के हर हुक्म को क़ज़ाए मुबरम की तलवार लिखा। याद रहे क़ज़ाए इला की दो क़िस्में है एक क़ज़ाए मुबरम, दुसरी क़ज़ाए मुअ़ल्लक़। क़ज़ाए मुबरम, वो हुक्मे इलाही है जो किसी के टाले न टले और किसी दुआ व इल्तेजा वग़ैरह से रद न हो। और क़ज़ाए मुअ़ल्लक़ वो हुक्मे इलाही है, कि किसी और पर उसकी तालीक़ हो, वो हुक्मे इलाही, दुआ वग़ैरह से रूक जाता है यानी हुक्मे इलाही दो क़िस्म की है। एक वो जो दुआ वग़ैरह से रूक जाता है और दूसरे नही रूकता और हुक्मे इलाही दुआ वग़ैरह से नहीं रूकता उसका नाम क़ज़ाए मबरम है और देवबंदियों के ''शैख़ुल हिन्द'' ने लिखा कि ख़ुदा का वह हुक्म जो दोआ व इल्तिजा से नहीं रूकता, रशीद अहमद गंगोही का हुक्म उसकी भी तलवार है, यानी रशीद गंगोही का हुक्म कोई टाल और काट नहीं सकता।

62 गंगोही की गुलामी इस्लाम का तमग़ा है

महमूदुल हसन देवबन्दी, रशीद अहमद गंगोही के बारे में लिखता है ''ज़माने ने दिया इस्लाम को दिया दाग़ उसकी फ़ुरकत का .... कि था दाग़े ग़ुलामी जिसका तमग़ाए मुसलमानी'' (मर्शिया गंगोही सफ़ा'–5)
तब्सरह :यानी रशीद अहमद गंगोही की ग़ुलामी के दाग़ को मुसलमानी का तमग़ा क़रार दिया गया है यानी जिसको उनकी गुलामी का दाग़ लग गया वो मुसलमान हुआ और जिसको गुलामी का दाग़ नही लगा वो मुसलमानी के तमग़े से महरूम रहा। दूसरे अल्फ़ाज में मुसलमान होने के लिए गंगोही की ग़ुलामी लाज़िमी है।

63 गंगोही मसीहाने ज़माँ था

महमूदुल हसन देवबन्दी 'अपने गंगोही' के बारे में लिखता है मसीहाने ज़माँ पहुँचा फ़लक पर छोड़कर सबको .... छुवा चाहे लहद में वारे क़िस्मत माहे कनआ़नी (मर्शिया गंगोही सफ़ा–7)
तब्सरह :यानी जैसे हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम आसमान पर उठा लिए गये, उसी तरह गंगोही जो मसीहाए जमाँ था वह भी सबको छोड़कर फ़लक पर पहुँच गया और कनआ़न का चॉद (यानी हज़रते युसुफ़ अलहिस्सलाम) क़ब्र के अन्दर छुप गया। इस शेर में गंगोही को हज़रते ईसा इलैहिस्सलाम और हज़रते यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से तशबीह देकर अपनी बेलगाम मुहब्बत का इज़हार कौन सा इस्लाम है ?

64 गंगोही की मौत विसाले मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नक़्शा है

महमूदुल हसन देवबन्दी, गंगोही के बारे में लिख़ता है– ''वफ़ाते सरवरे आलम का नक़शा आप की रेहलत...................... थी हस्ती ग़र नज़ीर हस्ती महबूबे सुबहानी'' (मर्शिया गंगोही सफ़ा–12 तहरीर : महमूदुल हसन देवबन्दी)
तब्सरह :यानी गंगोही साहब अल्लाह के महबूब हूज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मिस्ल थे, तो उनकी रेहलत भी आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की वफ़ात का नक़्शा थी'' (मआज अल्लाह)।

65 गंगोही और शैखैन के अलक़ाब

महमूदुल हसन देवबन्दी गंगोही के बारे में लिखता है– ''वो सिद्दीक़ और फ़ारूक़ कैसे अजब क्या है .... शहादत ने तहज्जुद में कदम बोशी की ग़र ठानी'' (मर्शिया गंगोही सफ़ा–12)

तब्सरह : सिद्दीक़ और फ़ारूक़ हज़रात शैखैन रदिअल्लाहु तआला अनहुम के वो मख़सूस आसमानी अलक़ाब है जो अल्लाह तआला और उसके हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनको अता फ़रमाए और हज़रते अ़ली रदिअल्लाहु अन्हु तहज़्जुद की नमाज़ में शहीद हुए थे और महमूदुल हसन देवबन्दी सिद्दीको–फारूक़ और हज़रते अ़ली की शहादत ने तहज़्जुद में उनकी क़दम बोशी की, को गंगोही की तरफ़ मन्सूब करता है

66 हिदायत सिर्फ गंगोही के दर से मिलती है

महमूदुल हसन देवबन्दी, गंगोही के बारे में लिखता है कि–''हिदायत जिसने ढूँढ़ी दूसरी जगह, हुआ ग़ुमराह.................... वह मीजाबे हिदायत थे कहै क्या नस्से, .क़ुरआनी'' (मर्शिया गंगोही, सफ़ा–9)

तब्सरह यानी जिसने गंगोही के आसताने को छोड़कर किसी और जगह हिदायत ढूँढ़ी वह ग़ुमराह हो गया क्यूँकिं गंगोही जी नस्से .क़ुरआ़नी (.क़ुरआ़न पाक की आयात) से हिदायत के परनाले थे। क्या देवबन्दी .क़ुरआ़न पाक की कोई ऐसी आयत दिखा सकते है जिसमें गंगोही साहब के बारे में ऐसी बात लिखी हो ?

67 औलिया अल्लाह की तौहीन

मर्शिया गंगोही में मजीद लिखा है–रक़ाबे औलिया क्यूँ ख़म न होतीं आपके आगे .... वह शहबाज़े तरीक़त थे मुहीउद्दीने ज़ीलानी (मर्शिया गंगोही सफ़ा–9)

तब्सरह : यानी जिस तरह हुज़ूर गौसे आज़म रदिअल्लाहु तआ़ला अन्हु के हुज़ूर तमाम औलियाए वक़्त ने अपनी ग़रदने ख़म की थीं उसी तरह गंगोही चूँकि मुहीउद्दीन ज़ीलानी थे। तो उनकें आगे औलिया की ग़रदने क्यूँ न ख़म होतीं। आपने मर्शिया गंगोही में देखा–कि, गंगोही को नबीए पाक, हज़रते ईसा, हज़रते युसूफ और हज़रते मूसा अलैहिस्सलाम और हुज़ूर गौसे आजम के बराबर क़रने की कोशिश की गई !

68 मदरसा देवबन्द अंग्रेज की पसन्द

13 जनवरी 1875 इस्वीं लेफ़्टिनेन्ट गवर्नर के एक ख़ूफ़िया मोतमिद अंग्रेज़ मुसम्मी पामर ने मदरसा देवबन्द का मुआयना किया और मुआयना करने के बाद कहा जो काम बड़े–बड़े कॉलेजों में हज़ारों रूपए के सर्फ से होता है वह यहाँ कौड़ियों में हो रहा है जो काम प्रिसिंपल हज़ारों रूपयों में महाना तनख़्वाह लेकर करता है वह यहाँ एक मौलवी, चालीस रूपए माहाना पर कर रहा है ये मदरसा ख़िलाफ़े सरकार नहीं बल्कि, मुआफ़िक़े सरकार, मम्दूव व मुआविने सरकार है'' (सवानेह–हयात मौलाना मुहम्मद अहसन नानौतवी, सफ़ा–217 मतबुआ मकतवबा उसमानिया कराची)

तब्सरह : ख़ुद अंग्रेज की ये शहादत है कि ये मदरसा ख़िलाफ़े सरकार नहीं। अब आप इन्साफ़ कीजिऐ कि उस बयान के सामने अब अफ़साने की क्या हक़ीकत है, जिसका ढिन्ढ़ोरा पीटा जाता है, कि–मदरसा देवबन्द अंग्रेजी साम्राज्य के ख़िलाफ़ सियासी सरगर्मियों का बहुत बड़ा अड्डा था।

69 सब क़ब्रो से अफ़जल क़ब्र अशरफ अली थानवी की है

''सब क़ब्रो से अफ़ज़ल क़ब्र (अशरफ़ क़ब्र) वह .कब्र है जो हज़रत अशरफ़ अली थानवी की लाश को अपने अन्दर लिए हुए है जो दीने ईलाही के मुजदद्दिद थे, क्या कोई उनका हमसर'' (अशरफुल सवानेह, जिल्द–4, सफ़ा 189 मतबुआ इदारा तालीफ़ाते अशरफ़िया मुल्तान, तहरीर : ख्वाज़ा अज़ीजुल हसन मौलवी व अब्दुल हक़)

तब्सरह : अस्तग़फिरूल्लाह! ये नादान अंबिया, सहाबा और औलिया की कब्रों से भी अफ़ज़ल थानवी की .क़ब्र मान रहा है।

70 मदरसा देवबन्द अंग्रेज के एजेन्ट

''मदरसा देवबन्द के कारकुनों में अकसरियत ऐसे बुज़ुर्गों की थी, जो गवर्नमेन्ट के क़दीम और हाल पेंशनर्स थे जिनके बारे में गवर्नमेन्ट को शक व शुबह करने की कोई गुन्जाइश ही न थी।'' (हाशिया सवानेह क़ासमी जिल्द–2, सफ़ा–247 मतबुआ मकतबा रहमानिया लाहौर तहरीर : मनाज़िर अहसन गिलानी)

71 अंग्रेज को मदरसा देवबन्द की सफाई

आगे चलकर इन्हीं देवबन्दी बुज़ुर्गों के मुताल्लिक़ लिखा–''मदरसा देवबन्द में एक मौक़े पर जब इन्क्वायरी आई तो उस वक्त यही हज़रत आगे बढ़े और अपने कारी एतमाद को सामने रखकर मदरसा की तरफ़ से सफ़ाई पेश की, जो कारगर रही। (हाशिया सवानेह कासमी जिल्द–2 सफ़ा–247 मतबुआ मकतबा रहमानिया लाहौर तहरीर : मनाज़िर अहसन गिलानी)
तब्सरह : घर का राजदार होने की हैसियत .कारी तैयब का बयान जितना बावजन हो सकता है वह मुहताज़े बयान नहीं है अब आप ही फ़ैसला कीजिए कि जिस मदरसे के चलाने वाले अंग्रेज के वफ़ादार पेशेनमक ख़्वार हों उसे बाग़ियाना सरगर्मियों का अड्डा कहना आख़ों में धूल झोंकने के मुतरादिक़ है या नहीं।

72 खत्मे नबूवत पर एक और डाका ''नानौतवी की कब्र ऐने नबी की क़ब्र है

''मौलाना रफ़ीउद्दीन साहब साबिक़ मुहतमिम दारूल उलूम देवबन्द का मकाशफ़ा है कि हज़रत मौलाना क़ासिम साहब नानौतवी बानी दारूल उलूम देवबन्द की क़ब्र ऐन किसी नबी की क़ब्र मे है'' (मुबश्शरात दारूल उलूम सफ़ा–36 मतबुआ मुहकमा नस्रो–इशाअत दारूल उलूम देवबन्द, इन्डिया)
तब्सरह : समझ में नहीं आता कि इस कश्फ़ से मौसूफ़ की क्या मुराद है ? क्या देवबन्द में किसी नबी की क़ब्र पहले से मौज़ूद थी ? जिसे ख़ाली कराया गया और नानौतवी साहब को वहाँ दफ़न कराया गया ? अगर ऐसा है तो उस नबी की निशान दही किसने की ?

73 नानौतवी से वह काम लेना है जो नबियों से लिया गया है और नानौतवी की क़ब्र पर वही का नुज़ूल

''जहाँ तसबीह लेकर बैठा बस एक मुसीबत होती है, इस क़दर ग़रानी कि जैसे सौ–सौ मन के पत्थर किसी ने रख़ दिये हों ज़ुबान व क़ल्ब सब बस्ता हो जाते हैं'' (हाशिया सवानेह कासमी ज़िल्द–2, सफ़ा–258 मतबुआ मकतबा रहमानिया लाहौर) इस शिकायत का ज़बाब हाजी़ साहब जुबानी ये नकल किया गया है कि ये नबूवत का आपके क़ल्ब (दिल) पर फैज़ान होता है और ये वो शक़्ले (गिरानी) है जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को वही के वक़्त महसूस होता था। तुमसे हक़ तआ़ला को वो काम लेना है जो नबियों से लिया जाता है (हाशिया सवानेह कासमी ज़िल्द–1, सफ़ा–259 मतबुआ मकतबा रहमानिया लाहौर)

74 मौलवी दीवार के पीछे देखता लेकिन नबी के बारे मे यह अक़ीदा के उन्हे दीवार के पीछे का इल्म नहीं

मौलाना हबीबुर्रहमान फ़रमाया करते थे कि इस ज़माने में कश्फी हालत दीवान जी की इतनी बढी हुई थी कि बाहर सड़क पर आने जाने वाले नजर आते रहते थे। दरो– दीवार का हिज़ाब (पर्दा) उनके दरमियान ज़िकर के वक्त बाकी नही रहता था। (हाशिया सवानेह कासमी ज़िल्द–2, सफ़ा–73 मतबुआ मकतबा रहमानिया लाहौर)।

तब्सरह : लेकिन अल्लाह के प्यारे हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे मे इन देवबन्दियों का यह अक़ीदा है कि अल्लाह के नबी को अपने अन्ज़ाम और दीवार के पीछे का इल्म नही (बराहीने कातिया सफ़ा–51, तहरीर : खलील अहमद अम्बेठवी)

75 मौत पर नानौतवी का इख्तियार

मक़ामी शीआ चौधरियों ने ये तदबीर की के एक नौजवान लड़के का फ़र्ज़ी जनाज़ा बनाया और हज़रत (कासिम नानौतवी) से आकर अर्ज़ किया कि हज़रत नमाज़े जनाज़ा आप पढ़ा दें। प्रोग्राम ये था कि जब हज़रत दो तकबीरें कह लें तो साहबे जनाज़ा एक दम उठ खड़ा हो और इस पर हज़रत के साथ इस्तेहज़ा और तमस्खुर (ठठा और मज़ाक) किया जाये। हज़रते वाला ने माज़रत फ़रमाई कि आप लोग शीआ हैं और मैं सुन्नी (देवबन्दी) उसूले नमाज़ अलग–अलग हैं। आपके ज़नाज़ा की नमाज़ मुझसे पढ़वाने में जाइज़ कब होगी ? शीओं ने कहा कि हज़रत बुजुर्ग हर क़ौम का बुजुर्ग़ ही होता है आप तो नमाज़ पढ़ा ही दें। चुनाँचे हज़रत ने मंजूर फरमा लिया और जनाज़ा पर पहुँच गये। मजमा था हज़रत एक तरफ ख़डे थे कि चेहरे पर ग़ुस्से के आसार देखे गये। आँख़ें सुर्ख़ थीं और ग़ुस्सा चेहरे से ज़ाहिर था। नमाज़ के लिए अर्ज़ किया गया तो आगे बढ़े और नमाज़ शुरू की। दो तकबीरें कहने पर जब तय शुदा प्रोग्राम के मुताबिक़ जनाज़ा में हरकत न हुई तो पीछे से किसी ने मुँह के साथ साहबे ज़नाज़ा को उठ ख़डे होने की सिसकार दी मग़र वो न उठा। हज़रत ने तकबीराते अरबा के बाद (चारों तकबीरों के बाद) उसी ग़ुस्से के लहज़े में फ़रमाया कि ''अब ये क़यामत की सुबह से पहले नहीं उठ सकता'' देख़ा गया तो मुर्दा था। (हाशिया सवानेह क़ासमी ज़िल्द–2 सफ़ा–71 मतबुआ मकतबा रहमानिया, लाहौर) लेकिन नबीए क़रीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुताल्लिक़ देवबन्दियों का अक़ीदा है–''रसूल के चाहने से कुछ नहीं होता'' (तक़वीयतुल ईमान सफ़ा–77, तहरीर : इस्माईल देहलवी)

76 खुदा से मिलने की ख़्वाहिश, थानवी से मिलने की ख़्वाहिश है

बजा है तेरी फ़ुरकत में अगर मुज़तर दिलो जाँ है .... ख़ुदा से मिलने का अरमाँ तेरे मिलने का अरमाँ था'' (अशरफ़ुल सवानेह, ज़िल्द–4, सफ़ा–231) **तर्जुमा** अगर आपकी ज़ुदाई में मेरे दिल व जान बेचैन है तो ये बिल्कुल सही है क्यूँकि अल्लाह से मिलने की ख़्वाहिश ही आपसे मिलने की ख़्वाहिश है यानी आपसे और अल्लाह से मिलना एक ही बात है।

77 थानवी और अंबिया अलैहिमुस्सलाम बराबर

थानवी के मुरीद ने पर्चा पेश किया उसमें लिखा था कि मैं सलाम से महरूम रहा और ये भी लिख़ा था कि आप (यानी अशरफ अली थानवी) को नबियों और सहाबाए कराम के बराबर समझता हूँ'' (मज़ीदुल मजीद थानवी, सफ़ा–18)
तब्सरह : चुनाँचे बजाए इस ग़लती को तसलीम करने के सैफ़ यमानी मे मंजूर नोमानी देवबन्दी ने बड़ा हाशिया लगाया है कि ये इबारत सही है।

78 थानवी को हज़रते आयशा सिद्दीक़ा रदिअल्लाहु तआला अन्हा की शान में ग़ुस्ताख़ी

एक मुरीद सवालेह को मकशूफ़ हुआ के अहक़र (अशरफ़ अली थानवी के घर हज़रत बीबी आयशा) आने वाली हैं। उन्होंने मुझसे कहा मेरा (अशरफ़ अली थानवी की) ज़ेहन मअन उसी तरफ़ मुन्तक़िल हुआ कि (कमसिन औरत हाथ आयेगी) इस मुनासिबत से के जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रते आयशा रदि अल्लाहु तआला अन्हा से निकाह किया तो हुज़ूर का सन् शरीफ़ पचास से ज़ियादह था, हज़रते आयशा बहुत कम उम्र थीं। वही क़िस्सा यहाँ है।'' (रिसाला अल इमदाद माह सफ़र 1335 हिज़री)

तब्सरह : कितनी बड़ी गुस्ताख़ी है के, **मुअ्मिनीन की माँ** हज़रते आयशा रदिअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा के घर आने को जोरू से मिलने से ताबीर किया जा रहा है। मआ़ज़–अल्लाह। **जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि पाक बीवियों और तमाम मोमिनीन की अम्मी के बारे में ऐसा गन्दा खयाल दिल में लाए वो** हरामुद्दहर अपनी माँ के बारे में क्या सोचता होगा ये आप खुद ही अन्दाज़ा लगाएँ!

79 हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम देवबन्दियों के बावर्ची

एक दिन हाजी इम्दादुल्लाह साहब ने ख़्वाब देखा कि आपकी भावज आपके मेहमानों का ख़ाना पका रही है। कि जनाब रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाये और आप की भावज से फरमाया उठ तू इस क़ाबिल नहीं के हाजी इम्दादुल्लाह के मेहमानों का खाना बनाये इसके मेहमान उलेमा है। इसके मेहमानों का ख़ाना मैं पकाऊँगां। (तज़किरतुल रशीद ज़िल्द–1 सफ़ा–64 व समाएम इम्दादिया थानवी सफ़ा–26)

तब्सरह : इस झूठे और मनगढ़त ख़्वाब को लिख़ने और छापने का मक़सद क्या है। यही के, उलमा ए देवबन्द का मक़ाम इतना बुलन्द है कि वह ख़ातून इस क़ाबिल नही थीं कि देवबन्द के मौलवियों का ख़ाना पकायें, बल्कि उनका ख़ाना पकाने के लिये हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जैसी हस्ती होनी चाहिए। इस तरह मआज़ अल्लाह हुज़ूर को बावर्ची बना दिया। (मआज अल्लाह, सुम्मा मआज़ अल्लाह)।

80 हज़रते आयशा सिद्दीक़ा रदि अल्लाहु तआ़ला अन्हा थानवी की नौकरानी की तरह

घर की ख़िदमत करने वाली! शफ़ीक़ अहमद ख़ादिम हुज़ूरे आली ख्वाब लिखता हूँ जिसका हुज़ूरे आली (यानी थानवी) से वादा करा कर आया था। अहकर ने ख़्वाब में देख़ा कि माहे मुबारक़ रमज़ान शरीफ़ है और इशा का वक़्त है। हज़रत बीबी आयशा रदिअल्लाहु अन्हा हुज़ूरे आली (यानी थानवी) के दरो–दौलत में तशरीफ़ फ़रमाँ हैं, तरावीह में हुज़ूरे अनवर का कुरआन पाक सुनने का इरादा रख़ते हुए हुज़ूर दरोदौलत में सफ़ुफ़ (सफ़ें) के बिछाने और पर्दे डालने के एहतेमाम मे रही हैं। इसके बाद अहक़र की आँख खुल गई ''(असलकुर्रूया जिल्द–2, सफ़ा–50)।

तब्सरह : 1. पहला कश्फ़ तो ये था कि बीबी आयशा रदिअल्लाहु अन्हा (मआज़ अल्लाह) थानवी के घर आने वाली हैं, लेकिन उसके ख़ादिम साहब के ख़्वाब ने हज़रते बीबी आयशा रदिअल्लाहु अन्हा को उनके घर पहुँचा दिया। न मालूम कैसे उसको मालूम हुआ कि ये उम्मुल मोमिनीन बीबी आयशा रदिअल्लाहु अन्हा हैं। इसलिए कि ख़्वाब में कोई ऐसा इशारा भी नहीं है जिससे ये मालूम हो। 2. ये भी कि बीबी आयशा रदिअल्लाहु अन्हा ऐसी जग़ह आ ग़ईं जहाँ सफ़ुफ़ और पर्दे का भी इन्तेज़ाम न था और ख़ुद ही ये एहतेमाम करना पड़ा (मआज अल्लाह)। 3. ये भी साबित हुआ कि ऐसा ख्वाब ख़ादिम ने पहले थानवी को ख़ुद सुनाया और फ़िर उससे वादा लिया कि इसको लिख़कर भेजना। चुनाँचे उसने वादे के मुताबिक़ लिख़कर भेज दिया और थानवी ने उसको छाप दिया (शाया कर दिया) और तहक़ीक़ करना लाज़िमी न समझा कि ऐसा ख़्वाब सच्चा भी हो सकता है या नहीं ?

81 हूज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शरीअ़त से बेख़बर थे

''और अल्लाह तआ़ला ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को शरीअ़त से बेख़बर पाया'' (**तर्जुमा** : कुरआ़न, सुरह–वद्दुहा अज़ अशरफ़ अली थानवी)।

82 हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, अशरफ अली थानवी की शक्ल में

मौलवी नज़ीर अहमद केरालवी अपना ख़्वाब बयान करता हैं ''हुज़ूर आक़ाए नामदार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़्वाब में अशरफ़ अली की शक्ल में देख़ा, और हुज़ूर सियाह अचकन बटनों वाली ज़ैब तन फ़रमाये हुए थे, ज़ैसा अशरफ़ अली थानवी गाहे–गाहे सियाह अचकन पहनते हैं। (असदक़ रूया ज़िल्द–2 सफ़ा–2) (अइज़्ज़ा) मुबारकपुर में जब था तो मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आप (अशरफ़ अली थानवी) की सूरत में देखा, फ़क़त ज़ियारत हुई। कोई बातचीत की दौलत नसीब नहीं हुई (असदकुल रूया ज़िल्द–2 सफ़ा–15) (अइज़्ज़ा) इस ख़्वाब से पहले तीन मर्तबा ख़्वाब देख़ा और तीनों मर्तबा हमारे मौलाना अशरफ़ अली थानवी की शक्ल में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नज़र आये। मैने तीनों मर्तबा मुसाफ़ह किया मग़र हुज़ूर बोले नहीं। (असदकुल रूया ज़िल्द–2 सफ़ा–25) (अइज़्ज़ा) एक और साहब अपना ख़्वाब लिखकर कहते हैं– ''इस ख़्वाब से पहले तीन मर्तबा ख़्वाब देखे और तीनों मर्तबा हमारे मौलाना अशरफ़ अली की शक्ल में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नज़र आये। मैने तीनों मर्तबा मुसाफ़ह किया, मग़र हुज़ूर बोले नहीं (असदकुल रूया ज़िल्द–2 सफ़ा–37)

तब्सरह : इन्साफ़ कीज़िए इन झूठे और मनगढ़त ख़्वाबों के शाया करने का मतलब क्या है ? (मआ़ज़ अल्लाह) असल मे मुरीदों के ज़हनों में बिठाना मक़सूद है कि थानवी को देख़ना गोया हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखना है और ये आ़क़ाए दो जहाँ की शान में बहुत बड़ी ग़ुस्ताख़ी है।

83 मदीना पाक थाना भवन है

जैसा कि मदीना शरीफ़ मे (जैसा–वैसा नही रह सकता) रहकर मैल कुचैल वाला नहीं रह सकता अल्लाह का शुक्र है हज़रत हाजी साहब की बरकत से ऐसा–वैसा यहाँ नहीं रह सकता''
(अल्अफ़ाज़ात अल यौमिया–अज़ अशरफ अली थानवी)
नोट : थाना भवन वह जगह है जहाँ अशरफ़ अली थानवी रहता था।

84 थानवी की मुरीदनी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बग़ल में

थानवी की मुरीदनी कहती है ''एक जंगल है और मैं उसमें हूँ और एक तख़्त है कुछ ऊँचा सा, उस पर ज़ीना (सीढ़ी), एक मैं और दो–तीन आदमी हैं हम सब ख़डे हैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इन्तेजार में। इतने में ऐसा मालूम हुआ कि जैसे बिजली चमकी। थोड़ी देर में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए और ज़ीना पर चढ़कर मेरे से बग़लग़ीर हुए और मुझको ज़ोर से ख़ीच दिया जिससे सारा तख़्त हिल गया हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बोले के आ तुझको पुलसिरात पर चलने की आदत डलवाता हूँ, सूरत शक्ल बिलकुल अशरफ़ अली थानवी जैसी है। इतने में आँख़ ख़ुल गई। (असदकुल रूया जिल्द–2, सफ़ा–23)

तब्सरह : कितने शर्मनाक अल्फ़ाज़ हैं कि कहा कि दो–तीन आदमी हैं, मैं तख़्त पर हूँ हुज़ूर अस्सलातु वस्ससलाम तशरीफ़ लाये, न उन दो–तीन आदमियों को सलाम किया न कलाम बल्कि आते ही साथ मआज़ अल्लाह एक ग़ैर औरत से दो–तीन आदमियों के सामने बग़लगीर हो गए और इतनी ज़ोर से दबाया कि सारा तख़्त हिल ग़या। वह भी उन दो–तीन आदमियों के सामने। बताओ कोई बुज़ुर्ग या आलिम तशरीफ़ लायें और उनके इन्तेज़ार में दो–तीन आदमी और एक औरत अज़राहे अकीदत मंदी ख़ड़ी है और बुज़ुर्ग या आ़लिम आते ही उस औरत से चिमट जाऐगें और इतने ज़ोर से दबाऐंगे कि सारा तख़्त हिलाकर रख़ दें। तो उन आदमियों पर इसका क्या असर होग़ा और फ़िर इस बात को शाया कर दे तो पढ़ने वाले की नज़र में उस बुज़ुर्ग या आ़लिम की हैसियत क्या होगी?

85 सैयदा हज़रते बीबी फातिमा रदि अल्लाहु अन्हा ने सीने से चिमटाया

मौलवी अशरफ़ अली थानवी और मौलवी फज़लुर्रहमान की ज़बानी बयान करते हैं कि ''हमने ख़्वाब मे हज़रते बीबी फ़ातिमा रदि अल्लाहु अन्हा को देखा। उन्होंने हमे अपने सीने से चिमटा लिया। (अल इफ़ाज़ात अलयौमिया मलफ़ूज़ात थानवी)।

86 गंगोही और नानौतवी मियाँ बीबी

ख़लीफ़ा थानवी मौलवी आशिक़ इलाही मेरठी लिख़ते हैं–''आप (यानी रशीद अहमद गंगोही) एक मर्तबा ख़्वाब बयान करते हैं कि मौलवी .कासिम नानौतवी अरूस (दुल्हन) की सूरत मे हैं और मेरा उनसे निकाह हुआ है। जिस तरह ज़न व शौहर (मियाँ बीबी) मे एक को दूसरे से फ़ायदा पहुँचता है। उसी तरह मुझे उनसे और उन्हें मुझसे फ़ायदा पहुँचा है। फ़िर ख़ुद ही ताबीर फरमाई कि आखिर उनके बच्चों की किफ़ालत करता हूँ (तज़किरतुल रशीद, ज़िल्द–2, सफ़ा–289 तहरीर : आशिक इलाही मेरठी) गंगोही का वह सिर्फ ख़याल नही बल्कि पुख़्ता ख़याल था, ये मौलवी अशरफ़ अली थानवी से पूछिये। वो फ़रमाते हैं–कि अकसर ये देख़ा गया है कि दिन में जिस बात का ख़्याल ज़ियादहतर बसा रहता है वही रात मे ख़्वाब की शक़्ल मे नज़र आती है। ख़्याल ही तो था जो बिन्द गया चुनाँचे ख़्वाब के मुताल्लिक़ थानवी साहब फ़रमाते हैं–कि हमारे ख़्वाब की हक़ीक़त तो अकसर ये होती है कि दिन भर हमारे ख्यालात में जो दिमाग़ में बसे हुऐ रहते हैं वही रात को सोते मे उसी सूरत में या किसी दूसरी सूरत में नज़र आ जाते हैं। (अल इफ़ाजात अल योमिया ज़िल्द–5, सफ़ा–55) हमने ऊपर गंगोही साहब का ख़्वाब फिर ख़याल बयान किया तो अब वह वाक़िया पेश करते हैं तो ख़्वाब व ख़याल था अ़ैनुल यक़ीन हो गया, गोया वह ख़्वाब जो गंगोही की ऐन मुराद बनकर भरे मजमें में दनदनाता हुआ तशरीफ़ लाया। चुनाँचें ''मौलाना हबीबुर्रहमान ने बयान फ़रमाया कि एक दफा गंगोही की ख़ानक़ाह में मज़मा था, हज़रत नानौतवी तशरीफ़ फरमा थे, कि हज़रत गंगोही ने हज़रत नानौतवी से मुहब्बत आमेज़ लहज़े में फरमाया कि यहाँ ज़रा लेट ज़ाओ। हज़रत नानौतवी कुछ शरमा से गए मगर हज़रत (गंगोही) ने फिर फरमाया तो मौलाना बहुत अ़दब के साथ चित लेट गए। हज़रत भी उसी चारपाई पर लेट गए और मौलाना की तरफ करवट करके अपना हाथ उनके सीने पर रख़ दिया जैसा कि आशिके सादिक़ अपने क़ल्ब (दिल) को तसकीन दिया करता है। मौलाना नानौतवी हरचन्द फ़रमाते रहे मियाँ ये क्या कर रहे हो, ये लोग क्या कहेंगे। हज़रत ने फ़रमाया कि लोग कहेंगे, तो कहने दो'' (अरवाहे स़लास़ा, हिक़ायत 305 सफ़ा 248 तहरीरः अमीर शाह क़ारी मुहम्मद तैयब, अशरफ़ अली थानवी)।

तब्सरह : क्या इन्हें रात–दिन हम जिस्म परस्ती के ख़याल ही आते रहते थे ? हालाँकि ये इतना ख़तरनाक फेले बद (बुरा काम) है जिससे इन्सान तो इन्सान, शैतान भी ख़ौफ़ ख़ाता है। चुनाँचें हज़रते सैयदना इब्ने अब्बास रदि अल्लाहु अन्हो का बयान है कि जब मर्द, मर्द पर सवार होता है तो शैतान इस ख़ौफ से भाग जाता है, कि कहीं ये लानत उस पर न आ जाए।

87 शाने रिसालत और अशरफ़ अली थानवी का इल्म

दारूल उलूम देवबन्द के बड़े जलसा–दस्तारबन्दी में बाज हज़राते अक़ाबिर ने इर्शाद फरमाया कि अपनी ज़माअ़त की मसलेहत के लिए हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फज़ाइल बयान किये जाएं। ताकि अपने मजमें पर जो वहाबियत का शुबह है, वह दूर हो। ये मौका भी अच्छा है क्यूँकिं इस वक़्त मुख़्तलिक तबक़ात के लोग मौजूद हैं। हज़रते वाला (अशरफ़ अली थानवी) ने बा अ़दब अर्ज़ किया कि इसके लिए रवायात की ज़रूरत है और वह रवायात मुझको मुस्तहज़िर (याद) नहीं (अशरफुल सवानेह, जिल्द–1, सफ़ा–130, तहरीरः ख्वाज़ा अज़ीजुल हसन व मौलवी अब्दुल हक़)

तब्सरह : हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फज़ाइल का बयान, ईमान बल्कि जाने ईमान है। वह मुसलमान ही क्या, जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फज़ाइल से न सुनाये। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फज़ाइल का बयान रवायात ही मे ही नही, .कुरआन की आयात में भी है, बल्कि .कुरआ़न दर असल है ही हुज़ूरे पाक के फज़ाइल पर मुश्तमिल। हज़रत वाला (थानवी) को अगर रवायात याद न थीं तो .कुरआ़न की आयात ही से ईमान अफ़रोज मौज़ू पर बयान कर सकते थे। **आला हज़रत** बरेलवी रहमतुल्लाह अलैह की किताब तजल्ली–उल–यक़ीन ही होती और वह उसे एक नज़र अगर देख़ लेते तो इस प्यारे मौज़ू पर यूँ ही बयान कर सकते थे कि दरख़्त भी सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फज़ाइल सुनकर झूम उठते लेकिन नहीं, फज़ाइले मुस्तफा सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम का बयान करना उनके नसीब में कहाँ ? और ग़ौर फ़रमाइये कि वो नबी पाक की तारीफ़ मस्लेहत की बिना पर अपने ऊपर वहाबियत के लगे तमगे (लेबल) को साफ करने के लिये बयान करना चाहते थे। आज भी ये लोग दूसरों को धोका देने के लिए महफ़िले सीरतुन्नबी, महफ़िले ज़िक्रे मुस्तफ़ा और औलिया अल्लाह कॉन्फ्रेन्स वग़ैरह कराके अपने आबा व अजदाद की यही मुनाफ़िक़ाना चाल चलते हैं। और जो इनके .काबू में आ जाता है आहिस्ता–आहिस्ता उसे अपने बुरे अक़ाइद में फँसा लेते हैं।

88 देवबन्दियों के मुजद्दिद का बचपन

थानवी साहब ने फरमाया कि एक रोज़ मैं पेशाब कर रहा था। भाई साहब ने आकर मेरे सर पर पेशाब करना शुरू कर दिया। एक रोज ऐसा हुआ, कि भाई साहब पेशाब कर रहे हैं मैनें उनके सर पर पेशाब करना शुरू कर दिया। एक मर्तबा मेरठ मे मियाँ इलाही बख़्श साहब मरहूम की कोठी में जो मस्ज़िद थी, सब नमाजियों के जूते जमा करके उसके शामियाने पर फेंक दिये। नमाजियों में ग़ुल मचा कि जूते क्या हुए, एक शख़्स ने कहा कि ये लटक रहे हैं मगर किसी ने कुछ नहीं कहा। फरमाया कि एक साहब थे सीकरी के, हमारी सौतेली वाल्दा के भाई बहुत ही नेक और सादा आदमी थे। वालिद साहब ने उनको ठेके के काम पर रख लिया था। एक मर्तबा गर्मी में भूखे प्यासे परेशान घर आये और खाना निकालकर खाने में मशगूल हुए। घर के सामने बाज़ार है। मैंने सड़क पर से एक कुत्ते का पिल्ला छोटा सा पकड़कर घर आकर उनकी दाल की रकाबी में रख दिया। बेचारे रोटी छोड़कर खड़े हो गये और कुछ नहीं कहा। एक रोज लड़कों और लड़कियों के जूते जमा करके उनको बराबर रखा और एक जूते को सबके आगे रखा वह गोया के इमाम था और रंग खड़े करके उस पर कपड़े की छत बनाई, वह मस्जिद .करार दी (मलफूज़ात हकीमुल उम्मत, जिल्द–4, सफ़ा 260 ता. 262 मतबुआ इदारा तालीफाते अशरफ़िया मुलतान)

89 उम्मते देवबन्दिया के हकीमुल उम्मत और मुजद्दिद अशरफ अली थानवी की ज़िन्दगी के चन्द हैरानकुन वाक़िआत

अशरफ अली थानवी साहब ने फरमाया एक दफ़ा एक शख्स ने मुझसे कहा कि ज़िक्र में मज़ा नहीं आता। मैनें कहा, मजा ज़िक्र में कहाँ मजा तो मज़ी (मनी) में होता है जो बीबी से मुजामेअ़त (हमबिस्तरी करने) के वक़्त ख़ारिज होती है, यहाँ कहाँ मजा ढूँढ़ते फिरते हो'' (अल इफ़ाज़ात अलयौमिया ज़िल्द–6, सफ़ा–61 मतबुआ इदारा तालीफाते अशरफिया मुलतान)

90 मुजद्दिद ए देवबन्द का बेनज़ीर किरदार

ख्वाजा अज़ीज़ुल हसन ने एक दफ़ा हकीमुल उम्मत मौलाना अशरफ अली थानवी साहब से अर्ज़ की, कि मेरे दिल में बार–बार ये ख़याल आता है कि काश मैं औरत होता और हुज़ूर (थानवी) के निकाह में आता। इस इज़हारे मुहब्बत पर थानवी साहब ने ग़ायत दरजे मसरूर (हद से ज़्यादा खुश होकर) होकर बेइख़्तियार हँसते हुए फरमाया आपकी मुहब्बत है, सवाब मिलेगा, सवाब मिलेगा।'' (अशरफुल सवानेह, ज़िल्द–2, सफ़ा–64)

91 मुजद्दिद ए देवबन्द का बेनज़ीर किरदार

मौलवी अशरफ अली थानवी साहब मौरिख 21 जमादिउल अव्वल 1351 हिज़री बाद नमाज़े जुमा अपनी एक मलजिसे म़ारिफत में बेहया औरत की हया की मिसाल देते हुए इर्शाद फरमाते हैं कि एक शख्स किसी के मकान पर उसको दरयाफ्त करने आया तो उसकी बीबी नई ब्याही हुई थी, जुबान कैसे बोले और बतलाना ज़रूर था। इसलिए कहा तो नहीं, लहँगा उठाकर और मूतकर और इस पुर को फाँदकर गई जिससे बतला दिया कि दरिया पार गया है बस ये शर्म, कि मुँह से तो नहीं बोली और शर्मगाह दिखा दी'' (अल इफ़ाज़ात अलयौमिया ज़िल्द–2, सफ़ा–28)

तब्सरह : ये वाक़ियात मामूली मौलवी के नहीं देवबन्दी फिरक़े के मुजद्‌दिद के हैं।

92 थानवी के मामू की कहानी थानवी साहब की ज़ुबानी

''अशरफ अली थानवी साहब फरमाते हैं कि इस हिफ़ाज़ते शरीअत का एक और वाक़ेया याद आया कि मामू साहब हैदराबाद से अव्वल बार कानपुर तशरीफ़ लाये तो चूँकि जले–भुने बहुत थे, उनकी बातों से लोग बहुत मुतास्सिर हुये। अब्दुर्रहमान साहब मालिक मुतबे निज़ामी भी उनसे मिलने आये और उनके हक़ाएक व मआरिफ़ सुनकर बहुत मोतक़िद हुए। अर्ज़ किया कि हज़रत वाज़ फ़रमाएं ताक़ि सब मुसलमान मुनतफ़े हो (फ़ायदा उठाएं) मामू साहब ने इसका जवाब अजीब आज़ादाना निराला दिया। कहा कि खाँ साहब मैं ओर वाज़ ? कहाँ सलाह कार कुजाओ मन खराब कुजा (कि लोगों की इस्लाह करने वाला वाज़ कहाँ और मैं खराब कहाँ) फिर जब ज़्यादा इसरार किया तो कहा कि हाँ एक तरह से कह सकता हूँ , इसका इन्तिज़ाम कर दीजिए। अब्दुर्रहमान खान साहब बेचारे मतीन बुज़ुर्ग थे, समझे कि ऐसा तरीक़ा क्या होगा कि जिसका इन्तेज़ाम न हो सके। ये सुनकर बहुत इश्तियाक़ के साथ पूछा कि हज़रत वो तरीक़ए खास क्या है ? मामू साहब बोले कि मैं बिल्कुल नंगा होकर बाज़ार से होकर निकलूँ इस तरह कि एक शख़्स तो आगे से मेरे उज़्वे तनासुल (मर्द के छोटे पेशाव की जगह) को पकड़कर खींचे और दूसरा पीछे से उँगली करे, साथ लड़को की फौज हो और वो ये शोर मचाते जायें भड़वा है रे भड़वा है रे भड़वा और उस वक़्त मैं हक़ाएक़ व मआरिफ़ बयान करूँ'' (अल इफ़ाज़ात अल योमिया ज़िल्द–1, सफ़ा–2012, मतबुआ इदारा तलीफाते अशरफिया मुलतान)

तब्सरह : मामू ने तो शरीअत से मज़ाक़ उड़ाया लेकिन भान्जे को क्या सूझी, कि वो हक़ीमुल उम्मत और मुज़द्‌दिद ज़मान होकर उसके तमस्ख़ुर व मज़ाक़ को क्यूँ बयान फ़रमाया लेकिन चूँकि मुज़द्‌दिद साहब बचपन से ही ऐसी लज़ीज़ (ग़लीज़) और चटपटी बातों से जी बहलाते थे तो फिर क्या करें ?

93 अल्लाह तआला को चालबाज़ लिख दिया

''(उधर तो) वो चाल चल रहे थे और इधर ख़ुदा चाल चल रहा था। और ख़ुदा सबसे बेहतर चाल चलने वाला है।'' (तर्जुमा : .क़ुरआन सूरह अनफ़ाल् आयत–30 अज़ फ़तेह मोहम्मद जालन्धरी देवबन्दी)।

94 क़ुरआन पर पेशाब

''एक दफ़ा एक बन्दे ने अर्ज़ की, के मैने ख़्वाब देखा है– कि मेरा अन्देशा है कि मेरा ईमान न जाता रहे। हज़रत (थानवी) ने फरमाया मियाँ बयान तो करो। उन साहब ने अर्ज़ किया कि मैने देखा है कि .क़ुरआन पर पेशाब कर रहा हूँ। हज़रत (अशरफ़ अली थानवी) ने फ़रमाया ये तो अच्छा ख़्वाब है'' (मज़ीदुल मजीद सफ़ा–166 अल इफ़ाज़ात अलयौमिया, ज़िल्द–7)

तब्सरह : आप अन्दाजा लगाईये कि .क़ुरआन पाक पर पेशाब करने का ख़्वाब लिखा है, हालाँकि .क़ुरआन पाक के ऊपर कोई चीज़ रखने की भी शरीअत मे मुमानियत है और पेशाब ऐसी गन्दी चीज़ है जिससे अपने आपको न बचाने वाला दोज़ख का हक़दार है और थानवी साहब फ़रमा रहे हैं कि अच्छा ख्वाब है। अस्तग़फ़िरूल्लाह।

95 देवबन्दियों का ख़ुदाई दावा

अशरफ अली थानवी साहब अपने पीरो–मुर्शिद की शान में लिखते हैं कि–''हज़रत की एक ख़ादिमा थी, जिसका नाम पीरानी साहिबा था। वह नक़ल करती हैं कि एक बार मेरे भतीजे हज को आते थे। आगबोट (यानी जहाज़) तबाही में आ गया। हालते मायूसी में उन्होंने ख़्वाब देखा कि एक तरफ हाजी साहब और दूसरी तरफ हाफिज़ ज़ैव साहब आगबोट को शाना (कंधा) दिये हुए तबाही से निकाल रहे हैं (सुबह मालूम हुआ कि आगबोट दो दिन का रास्ता तय करके सही व सालिम किनारे पर लग

गया। (इमदादुल मुश्ताक़ अली अशरफुल अख़लाक़, सफ़ा–119 मतबुआ मुमताज़ अकेडमी लाहौर, अज़ अशरफ़ अली थानवी)

तब्सरह : इस वाक़ए पर हमारे चन्द सवाल वहाबियों देवबन्दियों से है, कि हाजी साहब और मियाँ ज़ैब साहब को ये कैसे पता चल गया कि उनके ग़ुलाम डूब रहे हैं। क्या मुर्दे मदद करते हैं, और क्या देखते सुनते हैं ? पीरानी साहिबा ने ये वाक़ेआ बयान करके और अशरफ़ अली थानवी ने यह वाक़ेया लिखकर ये साबित कर दिया कि अल्लाह तआ़ला इन्सान की शक्ल में आकर मदद करता है और वह शकल उनके पीर की है। क्या यही तौह़ीद है। इसाईयों का अक़ीदा है कि हज़रते ईशा अलैहिस्सलाम मुज़स्सिमें ख़ुदा हैं। यानी अल्लाह तआ़ला ज़िस्मानी शक्ल में हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम बनकर आया (मआ़ज़ अल्लाह)

96 गंगोही का क़लम अर्श के पार चलता है

तज़किरतुल रशीद का मुसन्निफ़ लिखता है–''जिस ज़माने में मसला इमकाने किज़्ब पर आपके मुख़ालिफ़ीन ने शोर मचाया और तकफ़ीर का फतवा शाया किया। साईं तवक्कल शाह अम्बालवी की मजलिस में किसी मौलवी ने हज़रत इमाम बानी (यानी गंगोही) का जिक्र किया और कहा कि इम्कान किज़्ब बारी के काइल हैं ये सुनकर साईं तवक्कल शाह ने गर्दन झुका ली और थोड़ी देर मुराक़िब रहकर मुँह ऊपर उठाकर अपनी पंजाबी ज़ुबान मे ये अलफाज फरमाए– लोगों तुम क्या कहते हो ? मैं मौलवी रशीद अहमद गंगोही का क़लम अर्श के परे चलता हुआ देख रहा हूँ।'' (तज़किरतुल रशीद ज़िल्द–2, सफ़ा 322 तहरीर : आशिक ईलाही मेरठी)

तब्सरह : क्या समझे आप ? कहने का मतलब ये नहीं, कि गंगोही साहब की क़लम की लम्बाई अर्श की सरहद को पार कर गई बल्कि इस तशहीर से ये दावा करना मक़सूद है कि तक़दीरे इलाही के नौश्ते गंगोही के रूशहाते क़लम से लिखे जाते हैं।

97 गंगोही की ज़ुबान, ज़ुबाने इलाही है

मौलवी विलायत अली साहब फरमाते हैं, कि मेरे हमराह सफरे ह़ज में एक हकीम साहब साईन अंबाला थे जो हाजी (इम्दादुल्लाह) साहब के मुरीद थे। इसी ताल्लुक़ से उनको हज़रते इमाम रब्बानी (रशीद अहमद गंगोही) के साथ तआरूफ़ बल्कि ग़ायत दर्जए अक़ीदत थी। वो फरमाने लगे–मेरा तो ये अक़ीदा है कि, मौलाना (गंगोही) की जुबान से जो बात निकलती है, तक़दीरे इलाही के मुताबिक़ है।'' (तज़किरतुल रशीद, जिल्द–2, सफ़ा–218–219)

तब्सरह : ये खबर अगर सही है तो इसकी सेहत की दो ही सूरते हैं, या तो गंगोही जुमला मुक़ददरात पर मुत्तले थे, कि जुबान उसके ख़िलाफ खुलती ही नही थी या फिर उनके मुँह में ज़ुबान नहीं थी, बल्कि कुन की कुंजी थी। जो बात मुँह से निकली वो कायनात का मुक़द्दर बन गई। इन दोनों बातों में से जो बात भी इख्तियार कर ली जाए देवबन्दी मजहब पर दीन और दयानत का एक ख़ून ज़रूरी है।

98 देवबन्दियों का तबरी

कासिम नानौतवी की नानी साहबा के मुताल्लिक़ लिखते हैं– ''जिस मरीज़ को तीन साल मर्ज़ इस हाल में इस तरह गुज़रे कि करवट बदलना भी दुशवार हो। तो उसके मुताल्लिक़ ये खयाल बे मौक़ा न था कि बिस्तर की बदबू धोबी के यहाँ भी न जाएगी। मगर देखने वालों ने देखा कि ग़ुस्ल के लिए चारपाई से उतारने पर पोतड़े (पाखाना लगे हुए कपड़े) निकाले गये जो नीचे रख दिये जाते थे तो उनमें बदबू की जगह खुशबू और ऐसी निराली महक फूटती थी कि एक दूसरे को सुँघाता और हर मर्द–औरत ताज्जुब करता। चुनाँचे बगैर धुलाये उनको तबर्रूक बनाकर रख लिया गया।'' (तज़किरतुल ख़लील सफ़ा–96–97 तहरीर :आशिक इलाही मेरठी)

तब्सरह : हालाँकि देवबन्दी उलमा और पीरों के मरने के बाद उनके चेहरे नहीं दिखाये जाते। अभी कुछ अर्सा पहले मौलवी खान मुहम्मद कन्दियाँ वाले जिसे ख़त्में नबूवत का सरखेल कहा जाता है,

वफ़ात पा गए तो उनका मुहँ भी न दिखाया गया। तफसील के लिए मुफ़्ती फ़ैज़ अहमद उवैसी साहब की किताब ''गुस्ताख़ों का बुरा अन्जाम'' का ज़रूर मुतालआ करें?

.99 कुरआ़न में लफ्जे तहरीफ़ (तबदीली रद्दोबदल)

''मैं (अनवर शाह) कहता हूँ कि लाज़िम आता है ऊपर इस मज़हब के, कहो कि .कुरआ़न भी तहरीफ़ शुदा क्यूँकि बेशक मआनवी नहीं है थोड़ी इसमें भी और जो बात साबित है—मेरे नजदीक ये है, कि तहरीफ है। इसमें लफ़्जी भी ताहम ये जो है इरादे से है इनके (सहाबा के) या मुग़ालते (ग़लती) से है। बस अल्लाह ख़ूब जानता है ये बात।'' (फ़ैज़ुल बारी, जिल्द—3 सफ़ा—398 तहरीर : अनवर शाह कशमीरी)

तब्सरह : अगर मौलवी साहब की इस बात को मान लिया जाये तो फिर अल्लाह तआ़ला का ये फरमान कि ''हमने इसे नाज़िल किया और हम ही इसकी हिफाज़त करने वाले हैं, और ये वो किताब है जिसमें कोई शक नही'' का क्या बनेगा। और अगर .कुरआ़न में लफ़्ज़ी तहरीफ़ मान ली जाए तो किस चीज़ पर ईमान लाया जायेगा ? फिर .कुरआ़न और दूसरी किताब में क्या फर्क़ रह गया।

100 हज़रते अली रदि अल्लाहु अन्हु ने सैयद अहमद को नहलाया और सैयदा फ़ातिमा रदि अल्लाहु अन्हा ने कपड़े पहनाए

सैयद साहब ने एक रोज ख़्वाब में विलायत मआ़ब हज़रते अ़ली करम अल्लाहु वज्हु और हज़रते सैयदा फ़ातिमा रदि अल्लाहु अन्हा को देखा। हज़रते अ़ली ने आपको अपने दस्ते मुबारक से ग़ुस्ल दिया और अपने हाथ मुबारक से सैयद साहब की ख़ूब शस्तो—शू (सफाई) की जैसे माँ—बाप अपने बच्चे को नहलाते वक्त करते हैं और हज़रते फातिमा रदि—अल्लाहु—अन्हा ने आपको उम्दा लिबास पहनाया (सिराते मुस्तक़ीम (उर्दू) सफ़ा—189 मतबुआ कुतुबखाना रहीमिया देवबन्द, तहरीर : इस्माईल देहलवी)

तब्सरह : इस पर क्या तब्सरह लिखा जाये कि सैयदुननिसा रदिअल्लाहु अन्हा की शान में कितनी बड़ी ग़ुस्ताख़ी है कि उन्होंने 25 साला शाह साहब को ग़ुस्ल के बाद कपड़े पहनाऐ। शायद इसी लिये पठानों ने इस बदबख्त ईस्माईल देहलवी को वासिले जहन्नम कर दिया।

101 देवबन्दी बच्चियों के लिए थानवी जी का ख़ास तोहफ़ा

बहिश्ती ज़ेवर, अशरफ अली थानवी ने सिर्फ औरतों के लिए लिखी थी लेकिन इसमें ज़ैल तिब्बी चुटकुले दर्ज़ फरमाए'' **(1)** एक सूरत ये है कि उज़व तनासुल (मर्द के छोटे पेशाब की जगह) जड़ मे से पतला और आगे से मोटा हो जावे (वहिश्ती ज़ेवर ज़िल्द—11, सफ़ा—134 अज़ अशरफ़ अली थानवी) **(2)** ख़्वाहिशे नफ़्सानी बहाल ख़ुद हो मगर उज़व तनासुल में कोई नुक़्स पड़ जाये इसकी कई सूरतें हैं—एक ये कि सिर्फ़ ज़अफ (कमजोरी) और ढ़ीलापन हो (बहिश्ती ज़ेवर जिल्द—11, सफ़ा—136) **(3)** दूसरे ये कि ख्वाहिश बदस्तूर है मगर उज़व मख़्सूस मे फितुर पड़ जाए जिससे मुजामेअत पर पूरी .कुदरत न हो (वहिश्ती ज़ेवर ज़िल्द—11, सफ़ा—136) **(4)** ख़सिया का ऊपर को चढ़ जाना, इस मर्ज़ से चुनक भी हो जाती है (बहिश्ती ज़ेवर जिल्द—11, सफ़ा—14)।

तब्सरह : देवबन्दी मौलवी जब उज़व मख़्सूस के मुताल्लिक़ तसव्वरात व हालात के असबाक़ अपनी देवबन्दी नौजवान दोशीजाओं को पढ़ाते होगें तो फिर इसकी तशरीह करते हुए शायद .... और जब लड़कियाँ इस किताब का मुतालआ़ करती होगीं तो ख़याल ही ख़याल में अपने महबूब के उन हिस्सों का तसव्वुर करके कहाँ पहुँच जाती होंगी ? याद रहे कि किताब बहिश्ती ज़ेवर सिर्फ लड़कियों के लिये लिखी है। चुनाँचे अशरफ अली थानवी लिखता है कि मुद्दत दराज़ से इस ख़्याल में था, कि औरतों को एहतेमाम करके इल्में दीन को उर्दू ही मे क्यूँ न हो ज़रूर सिखलाया जाए। (बहिश्ती ज़ेवर—3) आखिर 1320 हिज़री में जिस तरह बन पड़ा ख़ुदा का नाम लेकर इसको शुरू कर दिया और नाम इसकी मुनासिबत मज़ाक निसवान के बहिश्ती ज़ेवर रखा गया। अपनी आँखों से देख लूँ कि—लड़कियों के दर्स में आमतौर पर ये किताब दाख़िल हो गई है। नाज़रीन खूसूसन लड़कियां,

देखकर ख़ुश हों और मज़ामीन किताबे हिज़ा में उनको ज़्यादा रग़बत हो। (बहिश्ती ज़ेवर, जिल्द–1) चुनाँचे आज तक़वीयतुल ईमान के बाद बहिश्ती ज़ेवर को हर देवबन्दी के घर मे होना ज़रूरी समझा जाता है। तज़ुर्बा कर लें, कि देवबन्दी हो और ये दो किताबें उसके घर में न हों, ये नहीं हो सकता। बल्कि हर देवबन्दी अपनी लड़की को बहिश्ती ज़ेवर जो कई रंगों में छापा गया है, देना लाज़िम समझता है।

102 जियारते शैख, ज़ियारते नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

''जिन्होंने हज़रत शैख़ (इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की रह.) को देखा, गोया उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा और जिन्होंनें मौलाना से हदीस पढ़ी गोया उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पढ़ी।'' (क़ससुल अबकार सफ़ा–100 मतबुआ इदारा तालीफात अशरफ़िया तहरीर : अशरफ अली थानवी) बिला तब्सरह।

103 तबलीग़ी जमाअ़त के कारकुनो का मक़ाम

तबलीग़ी जमाअत के बानी मौलवी इलियास साहब तबलीग़ी जमाअत के कारकुनो का अम्बिया अलैहिमुस्सलाम से मुआज़ना करते हुए लिखते हैं ''अगर हक़ तआ़ला किसी को लेना नहीं चाहते तो चाहे अंबिया अलैहिमुस्सलाम भी कितनी ही कोशिश करे तब भी ज़र्रा नही हिल सकता, और करना चाहे तो तुम जैसे ज़ईफ़ (कमजोर/बूढ़ा) से वो काम ले लें जो अंबिया अलैहिमुस्सलाम से भी न हो सके'' (मकातिबे इलियास, सफ़ा–107 तहरीर : मौलवी इलियास)।

104 मौलवी इलियास मिस्ल अंबिया अलैहिमुस्सलाम

''कुनतुम खैर उम्मत की तफ़सीर ख़्वाब में इलक़ा हुई कि तुम मिस्ल अंबिया अलैहिमुस्सलाम, लोगों के वास्ते ज़ाहिर किये गये हो''। (अलमलफुजाते इलियास, सफ़ा–51, तहरीर : मौलवी इलियास)।

105 नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर इल्ज़ाम तराशी

''और क़ब्ल अलदख़ूल (आपस में हम बिस्तरी से पहले) तलाक़ दो तो उस औरत पर इद्दत लाज़िम न होगी जैसा कि ज़ैनब को तलाक़ अलदख़ूल दी गई और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे बिला इद्दत निकाह कर लिया'' (बलग़तुल हैरान सफ़ा–267 तहरीर –मौलवी हुसैन अली)।
तब्सरह : ये सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ाते बरकात पर इल्ज़ाम तराशी करते हुए संगीन ग़ुस्ताखी का मुर्तक़िब हुआ है। हालाँकि हदीस शरीफ़ में है–''हजरते अनस रदिअल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि जब हज़रते ज़ैनब रदिअल्लाहु तआला अन्हा की इद्दत पूरी हो गई तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रते ज़ैद रदि अल्लाहु तआला अन्हु से फरमाया–कि तुम जैनब को मेरी तरफ से निकाह का पैग़ाम दो (सहीह मुस्लिम शरीफ़) हदीस शरीफ़ की रौशनी में मालूम हुआ कि देवबंदी मौलवी तो इमामुल अम्बिया पर भी इलज़ाम तराशी से बाज़ नहीं आते।

106 नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कमाल मुशाबिहत

''आप (सैयद अहमद) की ज़ाते वाला सिफ़ात इब्तदाए फितरत से जनाबे रिसालत मआ़ब सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की कमाल मुशाबेहत पर पैदा की गई थी''। (सिराते मुस्तक़ीम सफ़ा–4 तहरीर : मौलवी इस्माईल देहलवी)

107 अपने वालिद साहब, इमाम हसन व इमाम हुसैन रदिअल्लाहु अन्हुम से भी आला

हज़रते इमाम हसन रदिअल्लाहु अन्हु को सात साल की उम्र में तेरह हदीसें याद थीं .... हज़रत इमाम हुसैन रदिअल्लाहु अन्हु को छः साल की उम्र में आठ हदीसें याद थी। मेरे वालिद

साहब का जब दूध छुड़ाया गया तो पाव पारा हिफ़्ज़ हो चुका था। (फ़ज़ाइले आमाल सफ़ा–209 ता 211 मतबुआ मकतबा रहमानिया लाहौर, तहरीर : मौलवी ज़करिया)

108 नबूबत के लिए देवबन्दियों और मिरजाइयों में खाना जंगी

देवबन्दियों के शैखुल तफसीर मौलवी अहमद अली लाहौरी रक़्मतराज़ हैं ''मिर्जा ग़ुलाम अहमद . कादयानी असल में नबी ही थे लेकिन मैने उनकी नबूवत कशीद कर ली और ये नबूवत अब मुझे वही की मुनफअतों (फ़ायदों) से नवाज रही है। (तजल्ली देवंबद जनवरी 1957) (अ़इज्जा) काश हम हर माँ नसीब कुतुबुल आफ़ताब (मौलवी अहमद अली लाहौरी) की पैगँबराना सुहबत से मुस्तफीद होते (फ़ायदा उठाते) (खुद्दामुद्दीन लाहौरी 20 अप्रैल 1962 ई. सफा–8) (अ़इज़्ज़ा) रूखे अल्लामा अहमद अली की हर तजल्ली मे, नबूवत के सिराजे इल्म की तनवीर देखी (खुद्दामुद्दीन लाहौरी 24 मई 1962 ई.)।

109 देवबंदी धरम में हिन्दुओं वाले नाम रखना जाइज़ है

मौलवी अताउल्ला बुखारी ने दीनाजपुर जेल में पंडित कृपाराम ब्रह्मचारी ज़ाहिर किया और इस नाम से अपने अहबाब को ख़त लिखे (अताउल्ला शाह बुखारी सफा–37)।

सुनों मैं (अहमद अली लाहौरी) कहता हूँ कि अगर तुम अपना नाम माधौसिंह गंगाराम रखवाओ, नमाज़ पंजगाना अदा करो, ज़कात पाई–पाई गिनकर दो ह़ज फर्ज़ है तो करके आओ और पूरे रमज़ान के तीसों रोज़े रखो तो मैं फतवा देता हूँ कि तुम पक्के मुसलमान हो। (खुद्दामुद्दीन लाहौरी 22 फरवरी 1964 ई.)।

110 नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की निसबत से नाम रखना शिर्क

''अब्दुन्नबी, अब्दुर्रसूल, अली बख्श, हुसैन बख्स नाम रखना शिर्क है। (बहिश्ती ज़ेवर सफ़ा–145 अज़ अशरफ अली थानवी)

111 अवाम का एतक़ाद या गधे का उ़ज़्व मखसूस

''अवाम के एतक़ाद के लिए कमालात के इज़्हार पर हज़रत मौलाना मोहम्मद याकूब साहब इस एतकाद की एक मिसाल बयान फरमाया करते थे। है तो फहिश मगर बिलकुल चस्पाँ फरमाया करते कि अवाम के अक़ीदे की बिलकुल ऐसी हालत है जैसे गधे का अज़ुए मखसूस बढ़े तो बढ़ता ही चला जाये और जब ग़ायब हो तो बिलकुल ही नहीं वाक़ई अजीब मिसाल है'' (मलफूजात हक़ीमुल उम्मत ज़िल्द–3, सफ़ा–255 अशरफ थानवी)

112 और जब इस्तेन्जा के ढेले सोना बन गये

फरमाया कि शाह अब्दुर्रज़्ज़ाक साहब झुन्झानवी के साहबज़ादे को कीमिया का शौक था एक मर्तबा शाह साहब इस्तिन्जा फरमा रहे थे और ये साहबज़ादे कुछ दवाईयाँ कीमिया की लिए हुये खड़े थे। बाद फ़रागे़ ढेला पत्थर पर मारा, पत्थर सोना हो गया। एक सुनार उसमें से कुछ काटकर ले गया फिर शाह साहब ने फरमाया कि भाइ अगर कोई इसको काटकर ले गया गया तो नमाजियों को तकलीफ होगी फिर दोआ की वह पत्थर हो गया (मलफुज़ात हकीमुल उम्मत, ज़िल्द–18, सफ़ा–136 अशरफ अली थानवी)।

113 कालेजो में मीलादुन्नबी वाजिब और बाक़ी जगह बिदअत

मौलूद शरीफ (यानी मीलादुन्नबी) और जगह तो बिदअत है मगर–कालेज में जाइज़ बल्कि वाजिब है क्यूँकि इस बहाने से वो कभी रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ज़िक्र शरीफ़ और आपके फज़ाइल व मोज़ेज़ात सुन लेते हैं तो अच्छा है। इसी तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की

अज़मत व मुहब्बत उनके दिलों में क़ाएम रहे। (मलफुज़ाते हकीमुल उम्मत ज़िल्द–21, सफ़ा–326 अशरफ अली थानवी)

114 औरतो की फरज (छोटे पैशाब वाली जगह) मीठी थी न कड़वी–देवबन्दिओं के रँगीन मिजाज़ हकीमुल उम्मत

एक सिलसिलए ग़ुफ्तगू में मौलवी थानवी साहब ने फरमाया–मकतब के लड़कों ने हाफिज़ जी को निकाह की तरग़ीब दी, कि हाफिज़ जी निकाह कर लो बड़ा मजा है। हाफिज़ जी ने कोशिश करके निकाह किया और रात भर रोटी (फरज के साथ) लगा–लगाकर खाई। मज़ा क्या ख़ाक आता ? सुबह लड़कों पर ख़फा होते हुए आये कि सारे कहते थे कि बड़ा मजा है। हमने रोटी लगाकर खाई तो न नमकीन मालूम हुई न मीठी न कड़वी। लड़को ने कहा–हाफिज़ जी मारा करते हैं। आई शब हाफिज़ जी बेचारी को ख़ूब ज़दो–कूब किया, दे जूता–दे जूता। तमाम मुहल्ला जाग उठा और जमा हो गया और हाफिज़ जी को बुरा–भला कहा। फिर सुबह को आये और कहने लगे सिर्रो ने दिक कर दिया। रात हमने मारा भी कुछ मज़ा न आया और रूसवाई भी हुई। तब लड़कों ने खोलकर हक़ीक़त बयान की, के मारने से ये मुराद है। अब जो शब आई तब हाफिज़ जी को हक़कीत मुन्कशिफ़ हुई। सुबह जो आये तो मुँछ का एक एक बाल खिल रहा था और खुशी में भरे हुए थे। (मलफुज़ाते हकीमुल उम्मत ज़िल्द–6, सफ़ा–121)

115 हिन्दू ग्यारहवीं दे तो सुन्नत और मुसलमान दे तो गुनाह

अशरफ अली थानवी साहब ने फरमाया कानपुर में एक हिन्दू ग्यारहवीं देता था। मुझसे एक आदमी ने पूछा, मैनें कहा–इसके लिए जाइज़ है। उसकी ग्यारहवीं पर फातिहा दिलाया करो, मुसलमान के लिए तो गुनाह है और उसके लिए सुन्नत है। एक शख़्स की एक बात बड़ी पसंद आई उसने कहा मौलूद शरीफ़ (मीलादुन्नबी) देवबंद और थाना भवन में बिदअत है और अलीगढ़ कालेज में इबादत है। (मलफुज़ाते हकीमुल उम्मत ज़िल्द–15, सफ़ा–182 अज़ अशरफ अली थानवी)

116 कुरआन पर पेशाब अच्छा ख्वाब है। अल्लाह तुझे बेटा देगा

एक शख़्स मौलाना शाह अब्दुल अज़ीज़ के पास रोते हुए आये। हज़रत ने फरमाया क्या बात है ? उसने कहा मैनें ऐसा ख्वाब देखा कि मुझे अंदेशा है कि मेरा ईमान न जाता रहे। हज़रत ने फरमाया बयान तो करो ! उन साहब ने कहा मैनें देखा कि .कुरआन पर पेशाब कर रहा हूँ। हज़रत ने फरमाया ये तो बहुत अच्छा ख़्वाब है। तुम्हारे लड़का पैदा होगा और हाफ़िज़ होगा।(मलफुज़ाते हकीमुल उम्मत ज़िल्द–15, सफ़ा–182 अज़ अशरफ अली थानवी)

117 सफेद झूठ

''अकाबिर की हक़ परस्ती के ज़ेरे उनवान लिखते हैं –''फरमाया हज़रत मौलाना गंगोही ने एक बार मौलवी याहया साहब से फरमाया कि बरेली से जो रिसाला आये हैं वह मुझको सुनाना ताकि जो बात हमारे अन्दर ग़लती की हैं, उससे रूजू कर लें। उन्होंने कहा उनमें गालियों के सिवा क्या है ? इससे अन्दाजा हो सकता है हमारी हक़ परस्ती का, कि अपने दुश्मन के सही क़ौल को क़बूल करने को तैयार हैं। (मलफुज़ाते हकीमुल उम्मत ज़िल्द–14, सफ़ा–146 अज़ अशरफ अली थानवी)

तब्सरह : जबसे देवबंदियों ने ये ग़ुस्ताखाना किताबें लिखी हैं, **उलमा ए** अहले सुन्नत उनके वाहियात **अक़ाइद** को बयान करके उन्हें समझा रहे हैं। लेकिन उन्होंने किसी एक अक़ीदे से भी रूजू (तौबा) नही किया बल्कि अपने उलमा के ग़लत **अक़ाइद** के तहफ़्फ़ुज़ में सफहों के सफहे काले कर दिए और आला हज़रत को वहाबियों, देवबंदियों के ग़लत **अक़ाइद** की निशानदही पर अल शहाबुल साकिब में

मौलवी हुसैन अहमद मदनी ने 6000 से ज़्यादा गालियाँ देकर गालियों का आलमी रिकार्ड कायम किया। खुदा महफ़ूज़ रखे हर बला से, खुसूसन वहाबियों की इस वबा से।

मुनाफिक़ों की चन्द निशानियाँ

- हुज़ूर नबीये अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम माले ग़नीमत तक़सीम फरमा रहे थे। तो ज़ुलखुवैसरा ने कहा या रसूलुल्लाह अ़दल कीजिए। हुज़ूर ने फरमाया—तुझे ख़राबी हो, मैं न अदल करूगाँ तो अदल कौन करेगा ? हज़रत उमर रदिअल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ किया—मुझे इजाज़त दीजिए कि इस मुनाफिक़ की गर्दन मार दूँ। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इसे छोड़ दो। इसके और भी हमराही हैं कि तुम उनकी नमाजों के सामने अपनी नमाजों को और इनके रोजों के सामने अपने रोजों को हक़ीर देखोगे। वो .क़ुरान पढ़ेगें और इनके गलों से न उतरेगा, वो दीन से ऐसे निकल जाएगें जैसे तीर शिकार से (सहीह बुखारी व मुस्लिम शरीफ)
- हुज़ूर नबीए अक़रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मेरी उम्मत में इख्तिलाफ़ और इफ्तिराक़ के वाक़े होना लाज़िम हो चुका है। बस इस सिलसिलें में एक गिरोह निकलेगा जिसकी बातें बज़ाहिर दिलफरेब और खुशनुमा होंगी लेकिन क़िरदार ग़ुमराहकुन और ख़राब होगा। वो .कुरआ़न पढ़ेगें लेकिन .कुरआ़न उनके हलक़ के नीचे नहीं उतरेगा। वो दीन से ऐसे निकल जाऐगें जैसे तीर शिकार से निकल जाता है। जैसे खाली छूटा तीर फिर वापस नहीं लौट सकता ऐसे ही फिर दीन की तरफ वापसी इन्हें नसीब न होगी, यहाँ तक के तीर अपने कमान की तरफ लौट आये। वह अपनी तबीअत और शरसत के लिहाज़ से बदतरीन मखलूक़ होंगे। वह लोगों को .कुरआ़न और दीन की तरफ बुलाएंगें हालाँकि दीन से उनका कुछ भी ताल्लुक न होगा। जो उन्हें क़त्ल करेगा, वह अल्लाह का मुक़र्रब तरीन बन्दा होगा। सहाबाए कराम ने अर्ज़ की उनकी ख़ास निशानी क्या हैं ? इर्शाद हुआ—सर मुन्डाना (मिश्कात शरीफ रावी—हज़रत अबू सईद खुदरी रदि अल्लाहु अन्हु व हज़रत अनस रदिअल्लाहु अन्हु)
- इसी मज़मून की एक और हदीस बुख़ारी शरीफ़ मे हज़रत अली रदिअल्लाहु अन्हु से मरवी है। जिसमें नबीए पाक, सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ये फरमान शामिल है कि आख़िर ज़माने में नौउमर और कम समझ के लोगों की एक जमाअ़त निकलेगी। बातें वो बज़ाहिर अच्छी करेंगे लेकिन ईमान उनके हल्क़ से नीचे न उतरेगा। (बुख़ारी शरीफ़)
- नबीए आखिरूज़्ज़मा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया—आख़िर ज़माने में कीड़े मकोड़े की तरह हर तरफ मौलाने फट पड़ेंगे। तुममें से जो शख़्स वह ज़माना पाये तो उसे चाहिए कि उनसे ख़ुदा की पनाह माँगे।
- नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया—आख़िर जमाने में एक कौम निकलेगी, चढ़ती जवानी वाले, अक़्ल से कोताह, जबानों से .क़ुरआ़न पढ़ेंगे, गले से नीचे न उतरेगा। क़ाला—क़ाला (कहा—कहा) रसूलुल्लाह की रट लगाऐंगे, दीन से ऐसे निकले होंगे जैसा कि तीर शिकार से (कन्जुल आ़माल)।
- हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रदि अल्लाहु तआला अन्हु इन लोगों को अल्लाह की तमाम मख़लूक़ मे बहुत बुरी निगाह से देखते थे और फरमाया— कि बेशक ये लोग ऐसी आयतों को जो कुफ्फार के मुताल्लिक नाजिल हुयी है, उन्हें अहले ईमान पर चस्पा करेगें। (बुखारी शरीफ)

    अल्लमा फैज अहमद उवैसी फरमाते हैं कि ग़ुस्ताखे रसूल, अज़रूऐ शरीयत वल्द अज़ ज़िना या वल्द अज़ हराम होता है। **तशरीह** करते हुए लिखते हैं कि वालिदुज़्ज़िना वो है, जो अपने बाप के नुत्फ़े से न हो और वलदुल हराम, वो है जो होता बाप के नुत्फे से लेकिन उसकी पैदाइश क़ा हमल उस वक़्त ठहरा हो जब उसके बाप ने नापाकी की हालत में जिमाअ किया हो।

"अहादीसे मुबारका से ग़ुस्ताख़ाने रसूल की अ़लामत का खुलासा'

- नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इल्में ग़ैब पर खुसूसन ऐतराज करना।

- अंबिया अलैहिमुस्सलाम और औलियाए कराम अलैहिमुर्रहमा की शान में बेअ़दबी और ग़ुस्ताखी करना।
- ज़ाहिर में मुत्तक़ी और पहेज़गार ख़ुदातराश और शरीअत पर अमल करने वाले लेकिन अंदर से मुनाफिक़ और चालबाज़।
- बेहतरीन क़िराअत और .कुरआ़न पढ़ने वाले लेकिन .कुरआ़न उनके हलक़ से नीचे न उतरेगा। जैसे .कुरआ़न पाक में नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान बयान करने वाली आयात उन्हें नज़र नहीं आती।
- रोज़े और नमाज़ें लम्बी ताकि दूसरे लोग अनके सामने अपनी नमाजों को हक़ीर समझें।
- बड़ी–बड़ी शख्सियतों को दीनी मुआमलात में ग़ुस्ताखाना अन्दाज़ में टोकना।
- माथा उभरा हुआ और उस पर सियाह रंग के दाग़।
- रूख़सार दोनों तरफ़ से फूले हुए, आखें धँसी हुई, सर के बाल मुंडे हुए ताकि उनके सर, दूसरे मुसलमानों से नुमायाँ हो जाएं।
- तहबन्द या सलवार मोटी पिण्डली तक उठाई हुई ताकि अवाम लोग ख़याल करें कि यही लोग नबीए पाक के सच्चे पैरोकार हैं। मूँछें सफाचट।
- बुतों और मुशरिकों पर उतरने वाली आयात–अंबिया, औलिया और मोमिनों पर चस्पा करेंगें।
- उनकी पार्टी में अकसर उठती जवानी वाले छोकरे होंगे।
- पहले दर्जे के ग़बी (ज़िद्दी और हठधरम) होंगे।